

Manuscript

शमूएल के लिए प्रस्तावना

शमूएल की पुस्तक

अध्याय 1

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्‍त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकार्इ के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

[प्रस्तावना 1](#_Toc80739959)

[पृष्ठभूमि 2](#_Toc80739960)

[लेखनकारिता 2](#_Toc80739961)

[पारंपरिक दृष्टिकोण 2](#_Toc80739962)

[आलोचनात्मक दृष्टिकोण 3](#_Toc80739963)

[सुसमाचारीक दृष्टिकोण 5](#_Toc80739964)

[तिथि 6](#_Toc80739965)

[परिस्थितियां 8](#_Toc80739966)

[बनावट 9](#_Toc80739967)

[संरचना और विषयवस्तु 10](#_Toc80739968)

[राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना (1 शमूएल 1-7) 11](#_Toc80739969)

[शाऊल की असफल राजशाही (1 शमूएल 8-2 शमूएल 1) 13](#_Toc80739970)

[दाऊद की स्थायी राजशाही (2 शमूएल 2–24) 15](#_Toc80739971)

[सर्वव्यापक उद्देश्य 17](#_Toc80739972)

[मसीही अनुप्रयोग 22](#_Toc80739973)

[दिव्य वाचाएं 22](#_Toc80739974)

[राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना (1 शमूएल 1-7) 23](#_Toc80739975)

[शाऊल की असफल राजशाही (1 शमूएल 8-2 शमूएल 1) 23](#_Toc80739976)

[दाऊद की स्थायी राजशाही (2 शमूएल 2–24) 23](#_Toc80739977)

[परमेश्वर का राज्य 25](#_Toc80739978)

[उद्घाटन 28](#_Toc80739979)

[निरंतरता 28](#_Toc80739980)

[परिपूर्णता 28](#_Toc80739981)

[उपसंहार 29](#_Toc80739982)

प्रस्तावना

किसी न किसी समय पर, हम में से अधिकांश लोग ऐसे अगुवों को जानते हैं जिन्होंने किसी महान और भले कार्य को करना शुरू तो किया, लेकिन अंत में वे विफल रहे। जब ऐसा होता है, तो अक्सर हम आश्चर्य में पड़ जाते हैं कि भविष्य में क्या होगा। कई मायनों में, प्राचीन इस्राएलियों के साथ भी जिन्हें पुराने नियम की यह पुस्तक मिली थी जिसे अब हम 1 और 2 शमूएल कहते हैं, कुछ ऐसा ही हुआ था। उन्हें बताया गया था कि राजा दाऊद के शाही वंशज उनके देश को सुदृढ़ करेंगे और परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाएंगे। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, दाऊद और उसका घराना विफल हो गया, और इस्राएल में कई लोग आश्चर्य में पड़ गए कि भविष्य में क्या होगा। परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित होकर, शमूएल की किताब के लेखक ने स्वीकार किया कि दाऊद और उसके वंशज इस्राएल के लिए कई क्लेशों को लाए थे। लेकिन पूरी निश्चितता में, उसने अपनी पुस्तक को इस बात की पुनः-पुष्टि करने के लिए लिखा, कि दाऊद का घराना फिर भी इस्राएल के लिए महान आशीषों को लाएगा और परमेश्वर के राज्य का प्रसार पूरे संसार में करेगा।

हमारी श्रृंखला *शमूएल की पुस्तक* का यह पहला अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक रखा है, “शमूएल का परिचय।” इस अध्याय में, हम देखेंगे कि कैसे हमारी पुस्तक ने पहले प्राचीन इस्राएलियों को दाऊद के घराने के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर आशा बनाए रखने के लिए बुलाहट दी। और हम यह भी देखेंगे कि दाऊद के महान, सिद्ध धर्मी पुत्र, यीशु में परमेश्वर के राज्य के भविष्य के लिए हमारी आशाओं को रखने के लिए हमें यह कैसे प्रोत्साहित करती है।

आगे बढ़ने से पहले, हमें स्वीकार करना चाहिए कि आज लगभग सभी मसीही लोग बाइबल के इस भाग को एक पुस्तक के रूप में नहीं, बल्कि दो पुस्तकों के रूप में संदर्भित करते हैं। इसलिए, शमूएल की पुस्तक के विषय में बात करना पहली बार में अजीब लग सकता है। लेकिन तीसरी शताब्दी में ओरिजन की रचनाओं ने और चौथी शताब्दी में जेरोम ने पुष्टि की कि 1 और 2 शमूएल मूल रूप से एक अविभाजित पुस्तक थे। शायद इसे सबसे पहले सेप्टुआजेंट के रूप में प्रसिद्ध पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में प्राचीन स्क्रोल की सीमाओं को फिट करने के लिए दो पुस्तकों में विभाजित किया गया था। जहाँ तक हम जानते हैं, सबसे पहला *इब्रानी* लेख जिसने शमूएल को दो पुस्तकों में विभाजित किया वह बहुत बाद में प्रकाशित हुआ था, 16वी सदी की शुरूआती समय में। इन कारणों से, हम प्राचीन इब्रानी प्रथा का पालन करेंगे और शमूएल की पुस्तक — न कि *पुस्तकों* — की बात करेंगे। हम अपनी पुस्तक को 1 और 2 शमूएल के रूप में सिर्फ तब संदर्भित करेंगे जब हम विशेष अध्याय एवं पदों का हवाला देंगे।

शमूएल की पुस्तक के लिए हमारी प्रस्तावना तीन भागों में विभाजित होगी। सबसे पहले, हम अपनी पुस्तक की पृष्ठभूमि का पता लगाएंगे। इसे किसने और कब लिखा? दूसरा, हम इसकी सर्वव्यापक रूपरेखा को देखेंगे। शमूएल की पुस्तक को कैसे और क्यों लिखा गया था? और तीसरा, हम पुस्तक के मसीही अनुप्रयोग पर विचार करेंगे। आज हमारे लिए इस पुस्तक का क्या अर्थ है? आइए उन कुछ मूल पृष्ठभूमि वाले मुद्दों के साथ शुरू करें जो शमूएल की पुस्तक को समझने के लिए आवश्यक हैं।

पृष्ठभूमि

हम अपनी पुस्तक की पृष्ठभूमि की तीन विशेषताओं पर ध्यान-केंद्रित करेंगे: इसकी लेखनकारिता, वह समय जब इसे लिखा गया था, और उस समय पर परमेश्वर के लोगों की परिस्थितियाँ। आइए सबसे पहले शमूएल की लेखनकारिता को देखते हैं।

लेखनकारिता

यीशु और पहली सदी के प्रेरितों एवं भविष्यद्वक्ताओं की गवाही का पालन करते हुए, मसीही लोग ठीक ही विश्वास करते हैं कि शमूएल की पुस्तक को पवित्र आत्मा ने प्रेरित किया। इस कारण से, चाहे इसे किसी ने भी लिखा, पवित्र शास्त्र के इस भाग का सभी युगों के दौरान परमेश्वर के लोगों पर दिव्य अधिकार है। लेकिन साथ ही, पवित्र आत्मा ने किसी मनुष्य को इस पुस्तक को लिखने के लिए प्रेरित किया जिससे कि इसने उन परिस्थितियों को संबोधित किया जिनका सामना उसने और अन्य प्राचीन इस्राएलियों ने अपने समय में किया था। जितना अधिक हम इस मानवीय लेखक के बारे में समझते हैं, उतने ही बेहतर रीति से हम न सिर्फ यह समझ पाएंगे कि परमेश्वर ने शमूएल की पुस्तक क्यों दी, बल्कि यह भी कि परमेश्वर कैसे चाहता है कि हम इसे आज अपने जीवनों में लागू करें।

शमूएल की लेखनकारिता का पता लगाने के लिए, हम प्राचीन पारंपरिक दृष्टिकोणों के साथ शुरू करेंगे। फिर, हम मुख्यधारा के आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को सारांशित करेंगे। और अंत में, हम हाल के ऐसे अनेक सुसमाचारिक दृष्टिकोणों को देखेंगे जो इस अध्याय में हमारा मार्गदर्शन करेंगे। आइए हमारी पुस्तक की लेखनकारिता के पारंपरिक दृष्टिकोणों पर विचार करें।

पारंपरिक दृष्टिकोण

शमूएल की लेखनकारिता पर पारंपरिक यहूदी और मसीही दृष्टिकोण को *बेबीलोन की टालमूड* में दर्शाया गया है, जो कि पारंपरिक रब्बियों की टिप्पणियों और शिक्षाओं का एक अभिलेख है। *पुस्तिका बाबा बाथरा 14 बी* में विभिन्न पुराने नियम की पुस्तकों के बारे में प्रश्नों और उत्तरों की एक श्रृंखला में, हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

शमूएल ने उस पुस्तक को लिखा जो उसके नाम से है और न्यायियों एवं रूथ की पुस्तक।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, प्राचीन यहूदी गुरूओं ने न्यायियों एवं रूथ की पुस्तकों के साथ-साथ शमूएल को हमारी पुस्तक के लेखक के रूप में पहचाना। यह दृष्टिकोण पुराने नियम की पुस्तकों को भविष्यवाणी करने वाले प्रमुख व्यक्तियों के साथ जोड़ने की प्राचीन यहूदी एवं मसीही प्रथा को दर्शाता है।

हालाँकि, प्राचीन समयों में टालमूड के दावे को व्यापक रूप से माना जाता था, फिर भी इस दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए कोई सकारात्मक सबूत नहीं है। अब हमें उल्लेख करना चाहिए कि 1 इतिहास 29:29 इन पुस्तकों का संदर्भ देता है जिन्हें “शमूएल दर्शी के वृतांत” कहा गया है। लेकिन इसकी सबसे अधिक संभावना है कि यह अनुच्छेद बहुत कुछ इतिहास की पुस्तक में उद्धृत किए गए “नातन के वृतांत” और “गाद के वृतांत” के समान शमूएल की भविष्यवाणियों के गैर-कैनोनिकल संग्रह को संदर्भित करता है। हमें हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि 1 शमूएल 25:1, शमूएल भविष्यद्वक्ता की मृत्यु की तिथि को 2 शमूएल में, बाद में बताई गई कई घटनाओं से पहले बताता है। इसलिए, जबकि “शमूएल के वृतांत” में से कुछ सामग्री या इन्हीं के समान लेख हमारी पुस्तक में शामिल हो सकते हैं, फिर भी हम आश्वस्त हो सकते हैं कि स्वयं शमूएल भविष्यद्वक्ता के अलावा कोई और हमारी पुस्तक का लेखक था।

पुराने नियम के बारे में एक दिलचस्प बात यह है कि बहुत सारी पुस्तकें बेनामी हैं। यही 1 और 2 शमूएल की पुस्तकों के विषय में भी सच है। हम वास्तव में नहीं जानते हैं कि लेखक कौन है। हमें 1 इतिहास 29:29 में एक संकेत दिया गया है कि शमूएल और नातन और गाद ने अपनी भविष्यद्वक्ता वाली सेवकाई के लिखित अभिलेखों को पीछे छोड़ा था। इसलिए, जिस किसी ने भी पुस्तकों को उनके अंतिम रूप में रखा उनके पास यहाँ तक कि स्वंय शमूएल से भी मूल स्रोत सामग्री तक पहुँच थी। लेकिन चुंकि वह 1 शमूएल 25 के लगभग मर गया, तो यह स्पष्ट है कि उसने उसके नाम को धारण करने वाले दोनों संस्करणों को पूरा नहीं किया।

— डॉ. हर्बर्ट डी. वार्ड

हमारे समय में, शमूएल की लेखनकारिता पर प्राचीन पारंपरिक दृष्टिकोणों की पुष्टि करने वाले किसी भी व्यक्ति को पाना असामान्य है। इसके बजाय, कई आधुनिक व्याख्याकारों ने इस मुद्दे पर आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को बढ़ावा दिया है — आधुनिक विद्वानों के बीच माने जाने वाले मत जो पवित्र शास्त्र के पूर्ण अधिकार को अस्वीकार करते हैं।

आलोचनात्मक दृष्टिकोण

जैसा कि हमने अन्य श्रृंखलाओं में चर्चा की है, मार्टिन नॉथ के दृष्टिकोण से सबसे हाल के आलोचनात्मक व्याख्याकार बेहद प्रभावित हुए हैं। नॉथ की पुस्तक, *द ड्यूटरोनोमिस्टिक हिस्टरी, सबसे पहले 195*3 में जर्मन भाषा में प्रकाशित हुई। इसमें, नॉथ ने तर्क दिया कि रूत को छोड़कर, व्यवस्थाविवरण, यहोशू, न्यायियों, शमूएल और राजाओं की पुस्तकों को किसी एक शास्त्री या शास्त्रियों के समूह द्वारा एकीकृत कार्य के रूप में पूरा किया गया था। नॉथ ने इस शास्त्री या इन शास्त्रियों को “द ड्यूटरोनोमिस्ट” कहा। उसके दृष्टिकोण से, ड्यूटरोनोमिस्ट ने बेबीलोन की बंधुआई के दौरान इन पुस्तकों की रचना की। और इस पूरे ड्यूटरोनोमिस्टिक इतिहास का एक प्रमुख उद्देश्य था। इसको यह दिखाने के लिए लिखा गया कि बंधुआई का दंड जो कि इस्राएल के उत्तरी राज्य और दक्षिण के यहूदा राज्य पर आया था, वह ठीक ही था।

इस बात से इनकार करना मुश्किल है कि पुराने नियम की इन पुस्तकों में उनकी शब्दावली, शैली और ईश्वरीय-ज्ञान के दृष्टिकोणों में समानताएं हैं। इसलिए, बहुत हद तक, आलोचनात्मक विद्वानों ने नॉथ के प्रमुख दृष्टिकोणों की पुष्टि की है। लेकिन, हाल ही में, कई आलोचनात्मक विद्वानों ने विभिन्न तरीकों से नॉथ के दृष्टिकोणों को संशोधित किया है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है, कि उन्होंने ठीक ही तर्क दिया कि नॉथ ड्यूटरोनोमिस्टिक इतिहास में प्रत्येक व्यक्तिगत पुस्तक की विशिष्ट विशेषताओं को ध्यान में रखने में विफल रहे।

हमें यह भी उल्लेख करना चाहिए कि नॉथ और अन्य आलोचनात्मक टिप्पणीकारों ने तर्क दिया है कि शमूएल की पुस्तक में कई पहचानने योग्य, पहले में मौजूद साहित्यिक स्रोत हैं। उदाहरण के लिए, कुछ ने तर्क दिया है कि 1 शमूएल 1-3 में एली और शमूएल के बारे में कहानियों के लिए एक अलग स्रोत था। अन्यों ने दावा किया है कि हम 1 शमूएल 4-6 में वाचा के सन्दूक के बारे में कहानियों से एक अंतर्निहित, स्वतंत्र सन्दूक की कहानी का पुनः-निर्माण कर सकते हैं। और कुछ ने इसी स्रोत के लिए 2 शमूएल 6 को ठहराया है। कई व्याख्याकारों ने यह भी तर्क दिया है कि शमूएल के अंतिम संकलक ने पहले से मौजूद राजशाही की समर्थक व विरोधी कहानियों को 1 शमूएल 7-15 में एक साथ जोड़ा। और अन्य आलोचनात्मक विद्वानों ने दावा किया है कि उत्तराधिकार की कई कहानियाँ 2 शमूएल 9–20 और 1 राजा 1, 2 में दिखाई देती हैं। इस दृष्टिकोण से, इस स्रोत ने मूल रूप से यह समझाया कि क्यों सुलेमान, दाऊद के अन्य पुत्र के बजाय, इस्राएल का राजा बन गया।

हालांकि यह *संभव* है कि ये या इसी तरह के काल्पनिक स्रोत मौजूद रहे हों, लेकिन हम निश्चित नहीं हो सकते कि वे थे। और इन मामलो के साथ अति-व्यस्तता ने अक्सर हमारी पुस्तक की गंभीर गलत व्याख्याओं को जन्म दिया। अक्सर हर एक बार इन दृष्टिकोणों ने इस्राएल के विश्वास के विकास के बारे में उन मान्यताओं का प्रतिबिंबित किया है जो पवित्र शास्त्र के विपरीत हैं। और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वे शमूएल की पुस्तक की व्याख्या करने से भटक गए हैं, जैसा कि यह अब है, एक पूर्ण के समान, पवित्र शास्त्र के कैनन में।

इसलिए, विद्वानों ने राजाओं की पुस्तक के माध्यम से व्यवस्थाविवरण को देखा है, और उन्होंने कुछ ऐसा देखा है जो वास्तव में वहाँ है। उन्होंने देखा कि बहुत सारे वाक्यांश जो व्यवस्थाविवरण में दिखने लगते हैं उनका पुनः उपयोग पूरे यहोशू, न्यायियों, शमूएल और राजाओं में होता है। वहाँ पर भाषा, शब्दावली, अवधारणाओं, का भण्डार है, एक तरह से, अलंकृत भाषा का भण्डार और वाक्यांशो का भण्डार जैसा कुछ है जो इन पुस्तकों के बीच उपयोग व बार-बार उपयोग होता है। यह वास्तव में वहाँ हैं। प्रश्न यह है, कि हम इसे कैसे समझाएं? … उस विषयवस्तु को समझने का एक तरीका जो वास्तव में उस बात को स्वीकार करता और मानता है जिसे लेख अपने लिए दावा करता है वह यह है कि विषयवस्तु को देखना और कहना, ठीक है, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक कई स्थानों पर दावा करती है कि मूसा इस सामग्री के लिए जिम्मेदार है, और फिर ये अन्य लेख, ये सब मूसा के परम महत्व को प्रमाणित करते हैं। इसलिए, मुझे नहीं लगता कि हमें आश्चर्यचकित होना चाहिए जब हम व्यवस्थाविवरण में मूसा को इन सभी भाषा का उपयोग करते हुए पाते हैं और फिर हम बाद के इन लेखकों को उस भाषा एवं अवधारणाओं को लेते हुए पाते हैं जो मूसा के बाद आते हैं जिन्हें वे व्यवस्थाविवरण से सीखते हैं और अनिवार्य रूप से संसार का वर्णन उस माध्यम से करते हैं जिसे हम “चश्मा” कह सकते हैं जो कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में आधार है। इसलिए, यह वह तरीका है जिससे मैं इस विषय-वस्तु को समझाऊंगा। मुझे लगता है कि इस सभी भाषा और अलंकार का वर्णन करने का एक बेहतर और अधिक बाइबल पर आधारित तरीका है, जो ड्यूटरोनोमिस्टिक परिकल्पना की तुलना में व्यवस्थाविवरण से निकला है। मुझे लगता है, अधिक संभावना है, कि मूसा का गहरा प्रभाव था जिसे लेख स्पष्ट करते हैं कि यह था, और फिर बाद के बाइबल के लेखक उस तरीके से गहराई से प्रभावित हुए थे जिनमें उसने चीज़ों का वर्णन किया।

— डॉ. जेम्स एम. हैमिल्टन

शमूएल की लेखनकारिता के इन पारंपरिक और आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए, आइए कुछ समकालीन सुसमाचारिक दृष्टिकोणों को देखें जिनको इस श्रृंखला में देखा जाएगा। ये आधुनिक विद्वानों द्वारा माने जाने वाले दृष्टिकोण है जो पवित्रशास्त्र के पूर्ण अधिकार की पुष्टि करते हैं।

सुसमाचारीक दृष्टिकोण

सुसमाचारीक दृष्टिकोणों की पहचान यह है कि लेखनकारिता पर हम अपने विचारों को, जितना संभव हो सके, स्वयं पवित्र शास्त्र की गवाही के द्वारा आकार देते हैं। लेकिन न ही शमूएल की पुस्तक कही पर, और न ही पुराने या नए नियम का कोई भी दूसरा भाग, हमारे लेखक की पहचान करता है। हमारी पुस्तक बेनाम है। इसलिए, हम बस निश्चितता से नहीं कह सकते कि किसने शमूएल की पुस्तक को लिखा। फिर भी, जब हम अपनी पुस्तक की विषय-वस्तु को देखते हैं, तो हम इसके लेखक के बारे में कम से कम दो महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टियों को जान सकते हैं।

पहले स्थान पर, हमें ध्यान देना चाहिए कि शमूएल का लेखक स्रोतों का संकलनकर्ता था। इससे हमारा अर्थ है कि उसने अपनी पूरी पुस्तक को *शुरू से* या एकदम शुरूआत से बैठ कर नहीं लिखा। इसके विपरीत, उसने अपनी पुस्तक को स्वयं अपनी सामग्रियों और पहले के लिखित स्रोतों के साथ कुशलपूर्वक बुनाई करने के द्वारा लिखा। अब, हमें इन मामलों पर आलोचनात्मक विद्वानों के अक्सर अत्यधिक-काल्पनिक विचारों से बचने के लिए सावधान रहने की आवश्यकता है। लेकिन हम जानते हैं कि बाइबल की अन्य ऐतिहासिक पुस्तकें जैसे राजाओं एवं इतिहास की पुस्तकें, अक्सर ऐसे लिखित अभिलेखों का हवाला देते हैं जिनसे उनके लेखकों ने परामर्श लिया। और हमारे लेखक के लिए भी यही सच था।

कम से कम, 2 शमूएल 1:18 स्पष्ट रूप से “याशार” की “पुस्तक” — या स्क्रॉल — को एक पहले से लिखित स्रोत के रूप में संदर्भित करता है। यहोशू 10:13 इसी स्रोत का उल्लेख करता है। इसके अतिरिक्त, 2 शमूएल 22 और भजन 18 के बीच समानताएं दृढ़ता से सुझाव देते हैं कि हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक में “राजा दाऊद के दरबार के एक प्रसिद्ध भजन” को शामिल किया। इसके अलावा, वह शीर्षक जो 2 शमूएल 23:1-7 को “दाऊद के अंतिम वचनों” के रूप में पेश करता है, यह दर्शाता है कि हमारे लेखक ने दाऊद के दरबार के पहले से मौजूद आधिकारिक अभिलेखों से इसे निकाला। ये उदाहरण संकेत देते हैं कि, कई अन्य बाइबल के लेखकों के समान, शमूएल के लेखक ने जब अपनी पुस्तक को लिखा तो मौजूदा लिखित स्रोतों का उपयोग किया।

यह जानना कि हमारे लेखक ने विभिन्न स्रोतों का संकलन किया महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शमूएल की व्याख्या को कई तरीकों से प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, यह हमें शमूएल की पुस्तक के कई साहित्यिक गुणों को समझने में मदद करता है। जब हम अपनी पुस्तक को पढ़ते हैं, तो यह नकारना मुश्किल है कि विभिन्न अनुच्छेद महत्वपूर्ण रीति से अलग-अलग साहित्यिक शैलियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। कम से कम इसमें से कुछ शैलीगत विविधता शायद हमारे लेखक द्वारा विभिन्न स्रोतों से लेने के परिणामस्वरूप हुई। इससे भी अधिक, स्रोतों का उसका उपयोग यह भी समझाता है कि हमारी पुस्तक की कथानक या रूपरेखा अक्सर जैसा हम चाहते हैं उतना सुचारू रूप से प्रवाहित नहीं होते हैं। कई बार, हमारी पुस्तक काफी हद तक असंबद्ध लगती हैं। स्रोतों का उपयोग हमें यह भी समझने में मदद करता है कि क्यों यह पुस्तक एक जैसी सामग्री को बार-बार दोहराती है।

इसके अलावा, लिखित स्रोतों पर हमारे लेखक की निर्भरता कुछ अस्थायी हवालों को स्पष्ट करती हैं जो हमारी पुस्तक में दिखाई देते हैं। कम से कम सात मौकों पर, शमूएल की पुस्तक उल्लेख करती है कि कुछ विशेष परिस्थितियाँ “आज तक” सच मानी जाती हैं। जैसा कि हमने अन्य श्रृंखलाओं में देखा, यही अभिव्यक्ति व्यवस्थाविवरण, यहोशू, न्यायियों और राजाओं की पुस्तकों में आती है। और इनमें से कुछ उदाहरणों में, जैसे कि 1 राजा 8:8 में, “आज तक” वाली अभिव्यक्ति पुस्तक की अंतिम बनावट की बजाय, स्पष्ट रूप से पहले के एक स्रोत को संदर्भित करती है। इन और इन्हीं के जैसे कारणों के लिए, जब हम शमूएल की पुस्तक का अध्ययन करते हैं, तो हमें हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक में पहले से लिखी सामग्रियों को संपादित एवं शामिल किया।

यह स्वीकार करने के अलावा कि शमूएल का लेखक स्रोतों का संकलनकर्ता था, हम यह भी विश्वास कर सकते हैं कि वह प्राचीन इस्राएल में एक अगुवा था। हम सिर्फ इस तथ्य से यह जानते हैं कि हमारा लेखक कोई मामूली व्यक्ति नहीं था कि उसके पास पवित्र शास्त्र, याशार की पुस्तक और शाही अभिलेखों तक पहुँच थी। प्राचीन काल में, इस प्रकार के ग्रंथ सिर्फ उच्च श्रेणी के कुलीन मनुष्यों एवं लेवियों के लिए आरक्षित थे। इसलिए, हमारा लेखक निश्चित रूप से अपने दिनों में इस्राएल के अगुवों में से, या उनकी प्रत्यक्ष सेवा में था।

जब हम शमूएल की पुस्तक का पता लगाते हैं तो हमारे लेखक का सामाजिक स्तर हमें कुछ महत्वपूर्ण अपेक्षाएँ प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, यह जल्द ही स्पष्ट हो जाता है कि हमारा लेखक अन्य अगुवों के लिए लिखने वाला इस्राएल का एक अगुवा था। उसने अपनी पुस्तक को एक औसत इस्राएली के द्वारा सीधे पढ़ने के लिए नहीं लिखा। प्राचीन इस्राएल में साहित्य व्यापक रूप से प्रकाशित एवं वितरित नहीं किया जाता था। और यदि शमूएल के स्क्रॉल व्यापक रूप से उपलब्ध भी होते, तो भी अधिकांश इस्राएली उन्हें पढ़ने में सक्षम नहीं हुए होते। यह कुलीनों, लेवियों, प्राचीनों और अन्य अगुवों का काम था कि वे उसकी पुस्तक से परिचित हों और आम इस्राएलियों के जीवनों के लिए उसकी सामग्री को प्रसारित एवं लागू करें।

इसके अलावा, यह तथ्य कि हमारा लेखक अन्य अगुवों के लिए लिखने वाला एक अगुवा था, हमें उसकी पुस्तक के राष्ट्रीय हित की सराहना करने में भी मदद करता है। अब, शमूएल की पुस्तक निश्चित रूप से उन प्रकार की चुनौतियों से निपटारा करती है जिनका सामना आम मनुष्य, महिलाएं एवं बच्चे दैनिक आधार पर करते हैं। लेकिन, इस्राएल में एक अगुवे के रूप में, हमारे लेखक का संबंध मुख्य रूप से उन राष्ट्रीय राजनीतिक एवं धार्मिक मुद्दों से था, जिनका सामना पूरा इस्राएल कर रहा था। और हमें उसकी पुस्तक की व्याख्या को इन प्रकारों के मुद्दों की उन्मुख करना चाहिए।

शमूएल की पुस्तक की लेखनकारिता को देखने के बाद, हमें इसकी पृष्ठभूमि के दूसरे आयाम की ओर मुड़ना चाहिए: इसकी अंतिम रचना की तिथि। शमूएल की पुस्तक कब लिखी गई थी?

तिथि

हमने पहले ही ध्यान दिया है कि व्याख्याकारों ने शमूएल की लेखनकारिता के लिए अलग-अलग ऐतिहासिक समय कालों की पहचान की है। प्राचीन यहूदी और मसीही लोगों ने हमारी पुस्तक की तिथि को लगभग 10 वीं शताब्दी ई,पू. में, उन घटनाओं के समय के बहुत करीब रखा। इसके विपरीत, अधिकांश आधुनिक विद्वान तर्क देते हैं कि हमारी पुस्तक बेबीलोन की बंधुआई के दौरान अपने अंतिम रूप में में पहुँची। अब, सटीक रूप से यह पहचान करना संभव नहीं है कि शमूएल की पुस्तक कब पूरी हुई। लेकिन, जैसा कि कई पुराने नियम की पुस्तकों के साथ है, हम संभावित सबसे पूर्ववर्ती और नवीनतम तिथियों को मान सकते हैं जब हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक को पूरा लिखा।

आइए सबसे नवीनतम संभावित तिथियों के साथ शुरू करें जब शायद शमूएल को लिखा गया। इस समय सीमा को निर्धारित करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसके स्थान को उसमें नोट करें जिसे इस्राएल का प्राथमिक इतिहास कहा जाता है। यह रूत की पुस्तक को छोड़कर, उत्पत्ति से लेकर राजाओं की पुस्तकों में लिखित इतिहास है। जैसे-जैसे प्रत्येक पुस्तक अपना स्थान लेती हैं जहाँ पहली वाली पुस्तक समाप्त होती है, तो एक साथ, ये पुस्तकें आपस में जुड़ने वाली एक श्रृंखला बनाती है।

पहली पाँच पुस्तकें — उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण — मूसा के दिनों से आती हैं और प्राथमिक इतिहास की श्रृंखला में शुरूआती कड़ी बनाती हैं। बाकी की पुस्तकें — यहोशू, न्यायियों, शमूएल और राजा — इस इतिहास के बाद वाले व्यवस्थाविवरण पर आधारित भाग को बनाते हैं। ये पुस्तकें व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के ईश्वरीय-ज्ञान के दृष्टिकोणों पर बहुत अधिक निर्भर हैं। यहोशू मूसा की मृत्यु के साथ शुरू होती है और यहोशू की मृत्यु तक जारी रहती है। यहोशू की मृत्यु के बाद न्यायियों की पुस्तक हमें आगे ले जाती है। शमूएल इस्राएल के अंतिम न्यायी के रूप में शमूएल के उदय होने के साथ शुरू होती है और दाऊद के शासन के साथ समाप्त होती है। दाऊद की मृत्यु से शुरू होकर और बेबीलोन की बंधुआई के साथ समाप्त होकर राजाओं की पुस्तक उस स्थान से शुरू होती है जहाँ शमूएल समाप्त होती है। अब, जब हम राजाओं के शुरूआती अध्यायों से शमूएल की तुलना करते हैं, तो एक बात स्पष्ट हो जाती है: राजाओं का लेखक दाऊद के जीवन के वृत्तांत को जानता था जैसा कि यह शमूएल की पुस्तक में दर्ज था। और यह कारक दृढ़ता से सुझाव देता है कि राजाओं के लिखे जाने से पहले शमूएल का पूरा किया जाना आवश्यक था।

यह अवलोकन महत्वपूर्ण है क्योंकि हम इस बात से काफी निश्चित हो सकते हैं कि कब राजाओं की पुस्तक को लिखा गया था। यह 2 राजा 25:27-30 में दाऊद के शाही वंशज, यहोयाकीन, की बाबुल में 561 ई.पू. में जेल से रिहा करने के साथ समाप्त हुआ। इसके अतिरिक्त, राजाओं की पुस्तक 538 ई.पू. में बेबीलोन में बंधुआई से इस्राएल की वापसी को नहीं बताती है। इन कारणों से, हम उचित रूप से आश्वस्त हो सकते हैं कि राजाओं की पुस्तक को 561 ई.पू. और 538 ई.पू. के बीच लिखा गया था। और क्योंकि शमूएल की पुस्तक राजाओं की पुस्तक से पहले पूरी हो गई थी, इसलिए यह निष्कर्ष निकालना कि शमूएल की सबसे नवीनतम तिथि जिसमें शमूएल की पुस्तक को लिखा जा सकता है वह 538 ई.पू. थी, यानी बेबीलोन की बंधुआई के अंत से पहले।

सटीक रूप से यह जानना मुश्किल है कि 1 और 2 शमूएल को कब लिखा गया था और यह अपने अंतिम रूप में कब पहुँची थी। लेकिन जब हम पूरे पुराने नियम के प्रकाश में 1 और 2 शमूएल को देखते हैं, तो कुछ संकेत हैं जो कम से कम हमें सबसे नवीनतम संभावित तिथि दे सकते हैं जब यह अपने अंतिम रूप में पहुँच गया होगा। जब हम 1 इतिहास की पुस्तक को देखते हैं, तो यह वास्तव में बहुत कुछ 1 और 2 शमूएल की पुस्तकों से लेता है और उसकी जानकारी को मानता है। और चूंकि 1 और 2 इतिहास बंधुआई के बाद वाले युग में लिख गए थे, जब निर्वासित लोग यरूशलेम वापस लौट आए थे, तो हम अधिक से अधिक यह कह सकते हैं कि निश्चित रूप से यह अपने अंतिम रूप में उससे पहले से थी ... लेकिन हम अलग-अलग बातों के ज्ञान के अन्य संकेतों को पूरे पवित्र शास्त्र में भी देखते हैं, जिन्हें हम 1 एवं 2 शमूएल की पुस्तकों में देखते हैं। उसमें दाऊद वाली वाचा का ज्ञान है, जिसे कहें तो, भजन 89 में प्रतिबिंबित किया गया है ... इसलिए परंपराओं का निश्चित रूप से ज्ञान है, जिसे हम 1 एवं 2 शमूएल की पुस्तकों में देखते हैं जो ऐसा लगता है कि, निश्चित रूप से, बंधुआई से पहले, बंधुआई के समय और बंधुआई के बाद के युगों के दौरान इसके बारे में जागरूकता है। लेकिन इस संबंध में कि कब पुस्तक अंतिम रूप में एक साथ पूरी हुए, तो हम सबसे अधिक यह कह सकते हैं कि बंधुआई के बाद वाले युग से पहले यह एक साथ पूरी हुई।

— एन्ड्रू एबरनथी, Ph.D.

बेबीलोन की बंधुआई की इस सबसे नवीनतम संभावित तिथि को ध्यान में रखकर, हमें सबसे पूर्ववर्ती तिथि को देखना चाहिए जब शमूएल की पुस्तक पूरी हो गई होगी। जैसा कि हम देखेंगे, शमूएल की पुस्तक की विषय-वस्तु दृढ़ता से बताती है कि इसे विभाजित राजशाही के युग से पहले नहीं लिखा जा सकता था।

जैसा कि पवित्र शास्त्र हमें बताता है, 930 ई.पू. में, यारोबाम 1 ने दाऊद के घराने के खिलाफ इस्राएल के उत्तरी गोत्रों की अगुवाई की। उसके विद्रोह के कारण यहूदा के दक्षिणी राज्य के साथ इस्राएल के उत्तरी राज्य — या एप्रैम का जैसा कि अक्सर इसे कहा जाता था — का गठन हुआ। और कई अवसरों पर, शमूएल के लेखक ने संकेत दिया कि दो राज्यों में, परमेश्वर के लोगों के इस विभाजन से वह अवगत था। उदाहरण के लिए, 1 शमूएल 11:8 “इस्राएल के लोगों ... और यहूदा के लोगों” के बीच अंतर करता है। 1 शमूएल 18:16 टिप्पणी करता है कि “इस्राएल और यहूदा के समस्त लोग दाऊद से प्रेम रखते थे।” इसी तरह, हम 2 शमूएल 5:5 में पढ़ते हैं कि दाऊद ने “समस्त इस्राएल और यहूदा पर” राज्य किया। 2 शमूएल 12:8 में, परमेश्वर ने कहा कि उसने दाऊद को “इस्राएल और यहूदा” दिया था। 2 शमूएल 21:2 “इस्राएलियों और यहूदियों के लिये शाऊल की जलन” का उल्लेख करता है। और 2 शमूएल 24:1 में हम देखते हैं कि सभी गोत्रों को “इस्राएल और यहूदा” के रूप में वर्णित किया जाता है। इस्राएल और यहूदा के बीच इस भेद का दोहराया जाना दृढ़ता से सुझाव देता है कि शमूएल का लेखक अपनी पुस्तक को 930 ई.पू. में इस्राएल और यहूदा के विभाजन के बाद तक नहीं लिख सका होगा।

जब हम इन सभी कारकों को ध्यान में रखते हैं, तो हम देख सकते हैं कि हमारी पुस्तक के पूरा होने की संभावित सबसे पूर्ववर्ती तिथि विभाजित राज्य के कुछ समय के दौरान, 930 ई.पू. के बाद थी। और सबसे नवीनतम संभावित तिथि बेबीलोन की बंधुआई के दौरान, 538 ई.पू. से पहले।

अभी तक, हमने शमूएल की पुस्तक की लेखनकारिता एवं तिथि पर विचार किया है। अब, आइए इसकी पृष्ठभूमि की एक अन्य विशेषता को देखें: परिस्थितियां जिनका सामना परमेश्वर के लोग कर रहे हैं जब हमारी पुस्तक को लिखा गया था।

परिस्थितियां

ऐसे अगुवे के रूप में जिसके पास पवित्र शास्त्रों तक पहुँच थी, शमूएल का लेखक बहुत अच्छी तरह से जानता था कि जिन परिस्थितियों का सामना उसने और उसके श्रोताओं ने किया था वह विश्वास के लिए एक प्रमुख संकट का कारण थीं। एक ओर, वह अपने इतिहास को जानता था। परमेश्वर ने अपनी सेवा हेतु पृथ्वी को भरने के लिए आदम और हव्वा, और फिर बाद में नूह को आज्ञा दी थी। परमेश्वर ने इस वैश्विक मिशन को पूरा करने में अगुवाई देने के लिए अब्राहम और उसके वंशजों को बुलाया था। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने अपने लोगों को एकीकृत करने और उन्हें उस देश में ले जाने के लिए मूसा को नियुक्त किया था जहाँ से परमेश्वर का राज्य पूरे संसार भर में फैलेगा। और इससे भी अधिक, परमेश्वर ने दाऊद और उसके घराने को इस्राएल के ऊपर स्थायी राजवंश के रूप में स्थापित था जो उसके उद्देश्य को पूरा करने में उनकी अगवाई करेगा।

लेकिन दूसरी ओर, जब शमूएल के लेखक ने अपनी पुस्तक को लिखा, तो परमेश्वर के लोगों ने जिन परिस्थितियों का सामना किया, वे उन आशाओं के साथ आसानी से फिट नहीं बैठते थे जो उन्होंने दाऊद के घराने पर रखी थीं। सुनिश्चित होने के लिए, विभाजित राजशाही और बेबीलोन की बंधुवाई दोनों के दौरान इस्राएल की भयानक स्थिति के लिए चारों ओर बहुत दोष लगे थे। लेकिन पवित्र शास्त्र दाऊद के घराने के पापों, विशेष रूप से इनकी मूर्तिपूजा और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने में विफलता पर सारा दोषारोपण करता है। 1 राजा 11:29-40 और 12:1-24 जैसे अनुच्छेद, सीधे दाऊद के घराने को विभाजित राजतंत्र के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। और 2 राजा 20:12-19 एवं 21:10-15 जैसे अनुच्छेद संकेत देते हैं बेबीलोन की बंधुवाई भी मुख्य रूप से दाऊद के घराने की असफलताओं के कारण हुई थी।

दाऊद के घराने की असफलताओं ने परमेश्वर के लोगों के विश्वास को जड़ से हिला दिया था। जब परमेश्वर के दंडों ने उनकी आशाओं को कुचल दिया, तो उन्होंने सोचा कि वे कैसे दाऊद के घराने पर भरोसा रखना जारी रख सकते हैं। शायद परमेश्वर ने दाऊद के वंशजों से अपना मुंह मोड़ लिया था। शायद वे सब अभी तक गलत थे। और यह इन परेशान करने वाली परिस्थितियों में था, कि परमेश्वर ने शमूएल के लेखक को उसकी पुस्तक को लिखने के लिए बुलाया। उसने दाऊद के घराने पर इस्राएल की आशाओं को नवीनीकृत करने के लिए लिखा।

अब जबकि हमने शमूएल की पुस्तक की पृष्ठभूमि को देख लिया है, हमें अपने अध्याय के दूसरे प्रमुख विषय को देखना चाहिए: हमारी पुस्तक की बनावट। शमूएल के लेखक ने अपनी पुस्तक को कैसे आकार दिया? उन परिस्थितियों को संबोधित करने के लिए उसने जानबूझकर अपनी सामग्री को कैसे व्यवस्थित किया, जिनका सामना उसने और उसके मूल श्रोताओं ने किया? और उसकी पुस्तक ने परमेश्वर के लोगों को किस तरह की आशा प्रदान की?

बनावट

जब हम शमूएल की पुस्तक की बनावट को देखते हैं, तो हमें ध्यान में रखना चाहिए कि हमारा लेखक, जैसे कि, दो संसारों के बीच में खड़ा था। उसके द्वारा वर्णित घटनाओं का एक संसार और एक वह संसार जिसमें वह और उसके मूल श्रोता रहते थे। उसने अतीत में जो कुछ भी हुआ था, उसका एक सच्चा वृत्तांत देने के लिए स्वयं को समर्पित किया। लेकिन उसने स्वयं को अतीत के बारे में उन तरीकों में भी लिखने के लिए समर्पित किया जिसने उसके दिनों में इस्राएल के लोगों को संबोधित किया। दुर्भाग्यवश, सुसमाचारीक व्याख्याकार जब शमूएल की पुस्तक की व्याख्या करते हैं तो अक्सर इस भेद को बनाने में विफल रहते हैं। इसलिए, इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, हमें अपनी पुस्तक की बनावट पर इन दो प्रभावों को खोलने के लिए कुछ समय बिताना चाहिए।

एक ओर, पवित्र आत्मा की प्रेरणा के तहत, शमूएल का लेखक अपने श्रोताओं को अपनी पुस्तक के लिखे जाने से बहुत पहले जो कुछ हुआ था, उसका एक सच्चा वृत्तांत देने के लिए दृढ़ संकल्पी था। उसने उस बारे में लिखा जिसे हम कहेंगे “पहले का संसार,” उसकी पुस्तक में बताई गई ऐतिहासिक घटनाओं का संसार। पहली घटना जो उसने बताई वह 1 शमूएल 1:1-28 में शमूएल का जन्म था। बाइबल एवं पुरातत्व संबंधी सबूत बताते हैं कि शमूएल का जन्म 1070 ई.पू. के आसपास हुआ था।

और जिस अंतिम ऐतिहासिक घटना जो उसने बताया, वह 2 शमूएल 23:1-7 में दाऊद के अंतिम वचनों को याद करता है। सभी संभावनाओं में यह उपदेश दाऊद के अंतिम, आधिकारिक शाही घोषणाओं में से एक था, जो कि 970 ई.पू. उसकी मृत्यु के निकट दिया गया था। इस तरह, शमूएल की पुस्तक लगभग 1070 ई.पू. से लगभग 970 ई.पू. तक, इस्राएल के इतिहास का लगभग एक शताब्दी का विवरण देती है।

पुराने नियम के समय में परमेश्वर के राज्य के विकास में यह शताब्दी कितनी महत्वपूर्ण थी, इसको नज़रअंदाज करना बहुत मुश्किल होगा। यह इस्राएल में एक प्रमुख बदलाव का दौर था। जब शमूएल का जन्म हुआ, तो न्यायियों और लेवियों के असफल नेतृत्व के तहत इस्राएल अव्यवस्थित हालत में था। लेकिन जब तक दाऊद ने अपने अंतिम वचन बोले, तब तक परमेश्वर ने दाऊद और उसके वंश को इस्राएल के सभी गोत्रों पर स्थायी राजवंश के रूप में स्थापित कर दिया था। शमूएल के लेखक ने अपनी पुस्तक को यह समझाने के लिए बनाया कि कैसे कई महत्वपूर्ण घटनाएं इस्राएल में इन नाटकीय बदलावों का कारण बने।

जैसा कि हमने अभी कहा, शमूएल की पुस्तक में दर्ज की गई घटनाएँ उन सभी का हिस्सा थीं जिसे हमने “पहले का संसार” कहा है। लेकिन दूसरी ओर, शमूएल के लेखक ने उन समयों और परिस्थितियों को संबोधित करने का भी संकल्प किया था जिसमें वह और उसके मूल श्रोता रहते थे। हम इसे “उनका संसार” कहेंगे, उसकी पुस्तक में दर्ज ऐतिहासिक काल के बहुत समय बाद का, लेखक और उसके श्रोताओं का संसार। चाहे विभाजित राजशाही या बेबीलोन की बंधुवाई के दौरान, हमारे लेखक ने “उनके संसार” के लिए जो “पहले के संसार” में हुआ था, उसके महत्व को परमेश्वर के लोगों को सिखाने के लिए लिखा। और इस लक्ष्य ने उसकी पुस्तक की बनावट को गंभीर रूप से आकार दिया। अतीत के कोरे, तटस्थ विवरण को लिखने के बजाय, उसने अपने विवरण की रचना ऐसे की, ताकि यह उसके तात्कालिक श्रोताओं के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में बात करेगा।

बाइबल के अन्य लेखकों के समान, शमूएल के लेखक ने इसे तीन मुख्य तरीकों से किया। सबसे पहले, उसने अपने मूल श्रोताओं को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान की — वास्तविकताओं की ऐतिहासिक उत्पत्ति जिसका सामना उन्होंने अपने दिनों में किया। दूसरा, अनुकरण या अस्वीकार करने हेतु अपने श्रोताओं को मॉडल देने के लिए उसने अपनी पुस्तक में पात्रों का वर्णन किया। और तीसरा, उसने “पहले के संसार” में कई घटनाओं के बारे में लिखा जिन्होंने दिखाया कि वे कैसे “उनके संसार” में उसके श्रोताओं के अनुभवों का पूर्वाभास थे। इस रीति से, उसने अपने मूल श्रोताओं के सामने आने वाली चुनौतियों के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया।

हम अपनी पुस्तक की बनावट को दो चरणों में देखेंगे। सबसे पहले, हम इसके बड़े पैमाने वाली संरचना और विषय-वस्तु का परिचय देंगे। और दूसरा, हम देखेंगे कि यह संरचना और विषयवस्तु उसकी पुस्तक के लिए हमारे लेखक के अतिव्यापी उद्देश्य को कैसे प्रकट करते हैं। आइए शमूएल की पुस्तक की संरचना एवं विषयवस्तु के अवलोकन के साथ शुरू करें।

संरचना और विषयवस्तु

शमूएल की पुस्तक इतनी जटिल है कि इसके कई विवरणों में खो जाना आसान है — इतना खो जाना कि हम यह देखने में असफल रहते हैं कि यह कितना चयनात्मक है और इसे कैसे कुशलता से व्यवस्थित किया गया था। वास्तव में, शमूएल के लेखक ने सिर्फ कुछ लोगों एवं घटनाओं के बारे में लिखा, और उसने अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सावधानी-पूर्वक उन्हें व्यवस्थित किया। जितना अधिक हम हमारी पुस्तक की इन विशेषताओं के बारे में अवगत होते हैं, उतना ही बेहतर हम इसके मूल अर्थ को और आज अपने जीवनो के लिए हमें इसे कैसे लागू करना है समझ पाएंगे।

व्यापक रूप में कहें तो, परमेश्वर की आत्मा ने तीन मुख्य पात्रों पर ध्यान-केंद्रित करने के लिए हमारी पुस्तक के लेखक की अगुवाई की: शमूएल, शाऊल और दाऊद। और उसने इन पात्रों के बीच कई तार्किक संबंध बनाने के लिए भी हमारे लेखक की अगुवाई की। हमारे लेखक ने इस तथ्य के साथ शुरू किया कि परमेश्वर ने इस्राएल को राजशाही के युग में ले जाने के लिए शमूएल को ठहराया था। फिर उसने इस बात पर ध्यान-केंद्रित किया कि इस्राएल के पहले राजा के रूप में शाऊल कैसे असफल हो गया था। और अन्त में, उसने दिखाया कि परमेश्वर ने अपने राज्य को दृढ़ करने और फैलाने के एक साधन के रूप में दाऊद की राजशाही और वंश की स्थापना की थी। ये तीनों विभाजन एक साथ हमारे लेखक के सुसंगत आंकलन को प्रकट करते हैं कि कैसे परमेश्वर इस्राएल को न्यायियों के युग से दाऊद की राजशाही के युग तक लेकर आया।

1 और 2 शमूएल की साहित्यिक संरचना वास्तव में तीन राजाओं के इर्द-गिर्द घूम रही है, या शायद तीन व्यक्तित्व कहना उचित होगा, शमूएल एक प्रमुख व्यक्ति है ... फिर शाऊल एक प्रमुख व्यक्ति बना। दाऊद मंच पर आता है .. लेकिन वह मुख्य व्यक्ति बना रहा जब शाऊल दाऊद का पीछा पूरे देश भर में करता है, और अंततः 1 शमूएल के अंत में, उसे मार दिया जाता है और फिर 2 शमूएल को दाऊद के इर्द-गिर्द रचा जाता है। इस तरह, यह वास्तव में ये तीन व्यक्ति है जो दोनों पुस्तकों को संरचना प्रदान करते हैं।

— डॉ. जॉन ओसवॉल्ट

हमारी पुस्तक की इन विशेषताओं को ध्यान में रखकर, हम देख सकते हैं कि, बड़े पैमाने पर, शमूएल की पुस्तक को तीन मुख्य भागों में लिखा गया था: 1 शमूएल 1-7 में राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना; 1 शमूएल 8-2 शमूएल 1 में शाऊल की असफल राजशाही; और 2 शमूएल 2-24 में दाऊद की स्थायी राजशाही। आइए सबसे पहले राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना को देखें।

राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना (1 शमूएल 1-7)

शुरूआत से ही, यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि हमारे लेखक ने शमूएल को आदर्श बनाया। कहने का अर्थ है कि, परमेश्वर से एक चमत्कारी उपहार के रूप में और अनुकरणीय नैतिक चरित्र वाले व्यक्ति के रूप में उसने उसका अभिवादन किया। हमारी पुस्तक के अनुसार, शमूएल इतना आदर्श था कि परमेश्वर ने न सिर्फ शमूएल को, बल्कि उसके माध्यम से पूरे इस्राएल को स्वयं आशीषित किया। बेशक, हमारा लेखक और उसके श्रोता दोनों ही पवित्र शास्त्र एवं आम अनुभव से जानते थे कि शमूएल एक पापी था। इसलिए, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि वे शमूएल के नैतिक चरित्र की जटिलताओं से अवगत थे। लेकिन शमूएल के दोषों को इंगित करने के बजाय, हमारे लेखक ने जानबूझकर शमूएल और परमेश्वर के लिए उसकी सेवा को गौरवान्वित किया। उसने ऐसा यह जोर देने के लिए किया कि परमेश्वर ने शमूएल को ऐसे व्यक्ति के रूप में भेजा, सुसज्जित और स्वीकृत किया जिसने पहले शाऊल का अभिषेक करने के द्वारा और फिर दाऊद का अभिषेक करने के द्वारा इस्राएल के लिए राजाशाही को पेश किया।

शमूएल के शुरूआती वर्ष (1 शमूएल 1:1–2:11)। शमूएल के लिए बनाया गया यह उच्च आदर्श वाला रूपचित्र दो मुख्य भागों में विभाजित होता है। सबसे पहले, 1 शमूएल 1:1–2:11 में, हम शमूएल के शुरूआती वर्षों का वृत्तांत पाते हैं, उसके जन्म से लेकर दूध छुड़ाए जाने तक। इन अध्यायों में, हमारे लेखक ने जोर देकर कहा कि शमूएल का जन्म उसकी भक्त माँ की प्रार्थनाओं के लिए परमेश्वर का चमत्कारी उत्तर था, और उसने इस्राएल के लिए एक नई शुरूआत को चिह्नित किया।

शमूएल की पुस्तक एल्काना नामक पुरूष के साथ शुरू होती है, जिसकी दो पत्नियाँ हन्ना और पनिन्ना थीं। पनिन्ना के कई बच्चे थे, लेकिन हन्ना बांझ थी, इसलिए हन्ना के प्रति पनिन्ना का व्यवहार क्रूर था। अपने दुःख में, हन्ना ने प्रार्थना की और शपथ खाई कि यदि परमेश्वर ने उसे एक बेटा दिया, तो वह उसे जीवन भर के लिए प्रभु की सेवा में अर्पण कर देगी। और परमेश्वर ने चमत्कारी रीति से उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया।

जब शमूएल का जन्म हुआ, तब इस्राएल न्यायियों के समय की व्यर्थता में खोया हुआ था, ऐसा समय जिसको अराजकता एवं भ्रष्टता के लिए जाना गया। लेकिन शमूएल के आगमन के साथ, यह विश्वास करने का अच्छा कारण था कि परमेश्वर इस्राएल के लिए एक राजा को भेजने वाला था। हम 2:10 में इस आशा को देखते हैं, जहाँ शमूएल के जन्म के लिए परमेश्वर की महिमा को हन्ना ने इन वचनों के साथ समाप्त किया:

जो यहोवा से झगड़ते हैं वे चकनाचूर होंगे; वह उनके विरुद्ध आकाश में गरजेगा। यहोवा पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा; और अपने राजा को बल देगा, और अपने अभिषिक्‍त के सींग को ऊँचा करेगा (शमूएल 2:10)।

ऐसे समय में जब इस्राएल आंतरिक आक्रमण और विदेशी आक्रमणकारियों की समस्या का सामना कर रहा था, उस समय हन्ना ने उल्लेखनीय विश्वास को प्रदर्शित किया। शमूएल के चमत्कारी जन्म ने उसे आश्वस्त किया कि “जो यहोवा से झगड़ते हैं वे चकनाचूर होंगे” और यह कि परमेश्वर उनके विरुद्ध “आकाश में गरजेगा।” और इससे भी बढ़कर, हन्ना आश्वस्त थी कि यहोवा “पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा।” सभी देशों का न्याय करने के द्वारा वह अपने शाही अधिकार का प्रसार इस्राएल की सीमाओं से परे करेगा। लेकिन यह भी ध्यान दीजिए कि हन्ना ने *कैसे* विश्वास किया कि परमेश्वर अपने राज्य को पूरे संसार भर में फैलाने जा रहा था। “अपने *राजा* को बल“ देने के द्वारा और अपने शत्रुओं पर विजय में “अपने अभिषिक्‍त के सींग” को ऊँचा करने के द्वारा यह पूरा होगा। शमूएल के समय से पहले, इस्राएल के पास कभी कोई मानवीय राजा नहीं था। लेकिन हन्ना की स्तुति के वचनों के माध्यम से, हमारे लेखक ने इस्राएल के इतिहास के लिए शमूएल के सबसे महत्वपूर्ण योगदान को पेश किया। अपने जन्म से ही, इस्राएल को राजशाही के युग में ले जाने के लिए शमूएल को परमेश्वर द्वारा बुलाया गया था।

नेतृत्व में बदलाव (1 शमूएल 2:12–7:17)। राजशाही के लिए शमूएल की भूमिका का दूसरा भाग 2:12–7:17 में प्रकट होता है, जहाँ हम एली और उसके पुत्रों से शमूएल के लिए नेतृत्व में बदलाव के एक विवरण को पाते हैं। एली और उसके पुत्र, साथ में शमूएल, सभी लेवी गोत्र से थे। अब, न्यायियों की पुस्तक के अंतिम अध्याय हमें बताते हैं कि, इस समय के आसपास, कई लेवी लोग परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती थे और वे इस्राएल को परमेश्वर की व्यवस्था की अवज्ञा की ओर ले गए। और यह निश्चित रूप से एली और उसके पुत्रों के लिए सच था जो शीलो में वाचा के सन्दूक के सामने सेवा करते थे। लेकिन शमूएल में नेतृत्व के बदलाव ने इस्राएल के लिए एक नए दिन का प्रतिनिधित्व किया। हमारे लेखक ने इन अध्यायों में यह स्पष्ट किया कि स्वयं परमेश्वर ने इस लेवी वाले केंद्रिय अधिकार के परिवर्तन का निर्णय लिया। परमेश्वर के प्रति शमूएल की विनम्र एवं धर्मी सेवा, पूरे इस्राएल में सबसे प्रमुख लेवीय भविष्यद्वक्ता के रूप में उसकी गरिमा का कारण बनी। और एक बार जब शमूएल इस पद पर आया, तो वह इस्राएल देश को उसके इतिहास के एक नए युग में लेकर आया, राजशाही का युग।

न्यायियों की पुस्तक एक दिलचस्प पुस्तक है जहाँ यह उन समयों के बारे में बात करती है जब परमेश्वर किसी न्यायी को उठाता है जो युद्ध के समयों में, उनके बीच विवादों का निपटारा करने के समय में नेतृत्व करने के लिए अगुवे के समान बनता है। लेकिन शमूएल की पुस्तक तक शमूएल का अंतिम न्यायी होने के साथ, ऐसा है कि शमूएल के समय के दौरान उस काल में कोई भी न्यायी नहीं था। इस तरह उस समय पर यह अगुवे के बिना जैसा देश था। लेकिन शमूएल की पुस्तक के आने के साथ, यह इस बारे में बात करती है कि शमूएल कैसे पैदा हुआ था और फिर इस्राएल का अगुवा बना, इस मायने में, युद्ध के लिए उनका नेतृत्व करने में सक्षम होने, विवादों और अन्य बातों का निपटारा करने में सक्षम होने में वह कुछ-कुछ पिछले न्यायियों के जैसा बना।

— रेव्ह. डा. हम्फ्रे अकोगयेरम

1 शमूएल 1-7 में राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना को प्रस्तुत करने के बाद, शमूएल का लेखक 1 शमूएल 8-2 शमूएल 1 में शाऊल की असफल राजशाही की ओर मुड़ा।

शाऊल की असफल राजशाही (1 शमूएल 8-2 शमूएल 1)

कुल मिलाकर, हमारे लेखक ने शाऊल के आश्चर्यजनक नकारात्मक चित्रण को पेश करने के द्वारा शमूएल और शाऊल के बीच एक असाधारण अंतर को स्थापित किया। अब, हम पवित्र शास्त्र और अनुभव से जानते हैं कि परमेश्वर सबसे दुष्ट पापी को भी सार्वजनिक अनुग्रह प्रदान करता है जिससे कि उनका जीवन पूर्ण बर्बादी में नहीं होता है। और हमारे लेखक ने स्वीकार किया कि परमेश्वर ने शाऊल को चुना था, और यह भी कि शमूएल ने राजा के रूप में उसका अभिषेक किया था। उसने यह भी लिखा कि परमेश्वर ने शाऊल को इस्राएल के सभी गोत्रों के समर्थन से और उसके शासनकाल के शुरूआत में सैन्य विजय के साथ आशीषित किया था। फिर भी, हमारे लेखक ने *मुख्य रूप से* इस बात पर ध्यान-केंद्रित किया कि क्यों शमूएल ने शाऊल के लिए अपना समर्थन वापस ले लिया और उसका विरोध करना शुरू कर दिया। शाऊल ने बार-बार परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया और परमेश्वर का दंड उसके और उसके परिवार के खिलाफ आया। शाऊल के पाप इतने बड़े थे कि एक दुष्ट आत्मा ने उसे पागल बना दिया, और उसने निष्ठुरता से दाऊद का पीछा किया और इस्राएल के लोगों को बिना किसी उचित कारण तंग किया। शाऊल के इस नकारात्मक चित्रण ने शमूएल के मूल श्रोताओं को दिखाया कि परमेश्वर के संसार भर के महिमामय राज्य के लिए उनकी आशा शाऊल के परिवार में नहीं थी। इस बात के लिए, भविष्य के लिए उनकी आशा उस व्यक्ति के अलावा किसी और में नहीं होनी चाहिए, जिसे शाऊल के प्रतिस्थापन के रूप में परमेश्वर ने अनुमोदित किया, अर्थात दाऊद।

शाऊल के शुरूआती वर्ष (1 शमूएल 8–15)। बड़े पैमाने पर, शाऊल की असफल राजशाही दो प्रमुख भागों में विभाजित होती है, जो राजशाही के लिए शमूएल की भूमिका के विभाजन के समानांतर है। 1 शमूएल 8–15 में, इससे पहले कि दाऊद शाऊल के जीवन में एक घटक बना, यह सबसे पहले शाऊल के शुरूआती वर्षों को बताता है।

संक्षेप में, ये अध्याय इस बात पर ध्यान-केंद्रित करते हैं कि शमूएल के समर्थन से शाऊल कैसे राजा बना, इस्राएल के गोत्रों को एकजुट और इस्राएल के शत्रुओं पर कुछ महत्वपूर्ण विजयों में उनका नेतृत्व करता है। लेकिन अधिक समय नहीं बीता कि शाऊल परमेश्वर से दूर चला गया और अपने एवं इस्राएल के लिए परेशानियों को खड़ा कर दिया। वास्तव में, उसने मूसा की व्यवस्था और शमूएल की भविष्यद्वक्ता वाले निर्देशों का इतना अधिक उल्लंघन किया कि परमेश्वर ने राजशाही से उसे एवं उसके पूरे वंश को हटा देने की आज्ञा शमूएल को दी। 1 शमूएल 15:28-29 को सुनें, जहाँ हम शाऊल और उसके परिवार के ख़िलाफ़ न्याय की शमूएल की घोषणा को पढ़ते हैं:

तब शमूएल ने [शाऊल] से कहा, “आज यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है। और जो इस्राएल का बलमूल है वह न तो झूठ बोलता और न पछताता है; क्योंकि वह मनुष्य नहीं है कि पछताए” (1 शमूएल 15:28-29)।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, परमेश्वर ने इस्राएल का राज्य शाऊल से न सिर्फ अस्थायी रूप से छीना था। जैसा कि शमूएल ने घोषणा की, परमेश्वर उसको “एक पड़ोसी को जो [शाऊल] से अच्छा [था]” देने जा रहा था। और परमेश्वर — “जो इस्राएल का बलमूल है” — वह मनुष्य नहीं है “कि पछताए,” या जैसे कि अक्सर यह अनुवादित होता है कि वह “पछताता।” भविष्य में कुछ भी क्यों न हो, परमेश्वर शाऊल के घराने के लिए अपने तिरस्कार को कभी नहीं हटाएगा। और इस्राएल की राजगद्दी किसी और को अर्थात दाऊद को देने के अपने फैसले से कभी नहीं पलटेगा।

नेतृत्व में बदलाव (1 शमूएल 16–2 शमूएल 1)। शाऊल के शुरूआती वर्षों को इस रीति से बताने के बाद, हमारा लेखक शाऊल की असफल राजशाही के दूसरे प्रमुख भाग को बताता है, नेतृत्व परिवर्तन जो 1 शमूएल 16 – 2 शमूएल 1 में हुआ।

बहुत कुछ जैसे परमेश्वर ने एली और उसके पुत्रों से शमूएल के लिए लेवीय अधिकार के बदलाव का समर्थन किया, वैसे ही परमेश्वर ने शाऊल से दाऊद के लिए शाही बदलाव का समर्थन किया। शाऊल और दाऊद के बीच कई समागम में, यह स्पष्ट हो गया कि शाऊल परमेश्वर की नापसंदगी के लायक था। वह एक दुष्ट आत्मा के प्रभाव में आया और पागलपन में डूब गया। उसने बार-बार अपने शाही अधिकार का दुरुपयोग किया। उसने अनुचित रूप से दाऊद को मारना चाहा। और अपने जीवन के अंतिम दृश्यों में, शाऊल ने मृतकों से भी सलाह ली। परिणामस्वरूप, पलिश्तियों के साथ लड़ाई में शाऊल और उसके पुत्रों की मृत्यु हो गई। लेकिन इस पूरे समय में, परमेश्वर ने दाऊद को आशीषित किया। दाऊद निर्दोष बना रहा और उसने शाऊल के प्रति नम्रता एवं परमेश्वर के प्रति वफादारी के साथ परमेश्वर की दया का प्रत्युत्तर दिया। इन तरीकों में शाऊल और दाऊद की तुलना करने के द्वारा, बिना किसी संदेह शमूएल के लेखक ने यह दिखाया, कि परमेश्वर ने शाऊल को पूरी तरह से तिरस्कृत कर दिया था और उसने इस्राएल के राजा के रूप में शाऊल का प्रतिस्थापन करने के लिए दाऊद को खड़ा किया था।

राजा शाऊल और राजा दाऊद एकदम अलग-अलग थे, और मेरे लिए वास्तव में मुख्य अंतर यह है कि पहला, बुरा राजा होने का अर्थ क्या है इस बात का प्रतीक है और दूसरा, अच्छा राजा होने का क्या अर्थ हैइस बात का। एक महान राजा कैसा होगा शाऊल में वे सभी बाहरी अपेक्षाएं फिट बैठती हैं। उसका वर्णन एक सम्मानित परिवार से आने वाले के रूप में किया गया है। इस्राएल देश में हर किसी से लम्बा होने के रूप में उसका वर्णन किया गया था। इस तरह, वह सभी बाहरी अपेक्षाओं में फिट बैठता है, लेकिन वह परमेश्वर के लोगों के राजा के रूप में विभिन्न तरीकों से दुर्भाग्यवश, बुरी तरह से विफल हो गया, ... उसने दिखाया कि कैसे वह परमेश्वर के बजाय मनुष्यों से डरा। उन्हें विशेष रूप से परमेश्वर द्वारा एक नगर को नष्ट करने का आदेश दिया गया था, और वे वहाँ गए, और परमेश्वर की सहायता से उन्होंने लड़ाई जीती, लेकिन उन्होंने लूट में कुछ को अपने लिए, पुरुषों, एवं सैनिकों ने बचा लिया। और शाऊल राजा ने इसकी अनुमति दी कि ... और शमूएल ने उसे स्पष्ट कर दिया कि परिणामस्वरूप, राज्य उससे छीन लिया जाने वाला था। दूसरी ओर, राजा दाऊद बहुत अलग था। यह मेरे लिए दिलचस्प है कि शमूएल बाद में यिशै के घर जाता है, इस्राएल में एक दूसरे परिवार में, और परमेश्वर ने उसे इस्राएल के अगले राजा का अभिषेक करने के लिए वहाँ भेजा है। इसलिए, प्रत्येक पुत्र को देखने हेतु और यह देखने के लिए कि किस को परमेश्वर बुलाएगा, शमूएल ने यिशै से उन्हें बुलाने के लिए कहा। ठीक, यिशै अपने सातों पुत्रों को लाता है लेकिन सबसे छोटे पुत्र, दाऊद, को बाहर छोड़ देता है। और वह बस बाहर खेतों में भेड़ों की चरवाही कर रहा है। लेकिन शमूएल भी, जब वह सबसे बड़े, एलिआब को देखता है, तो बाहरी दिखावे में विश्वास करने के भ्रम में पड़ जाता है। वह देखता है कि वह कितना लंबा है, और स्पष्ट रूप से उसके पास राजा की छवि थी, और उसने सोचा, “निश्चित रूप से परमेश्वर का अभिषिक्त यहाँ खड़ा है।” लेकिन परमेश्वर ने कहा, “उसके रूप पर दृष्‍टि न कर। मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्‍टि मन पर रहती है।” परमेश्वर ने उन भाइयों में से किसी को नहीं चुना। अंत में उन्हें सबसे छोटे, दाऊद, को खेतों में से लाने के लिए जाना पड़ा, और परमेश्वर ने स्पष्ट किया कि यही वह है।

— डॉ. डॉग फॉल्स

दाऊद की स्थायी राजशाही (2 शमूएल 2–24)

यह देखने के बाद कि शमूएल की पुस्तक किस तरह से राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना के साथ शुरू होती है और शाऊल की असफल राजशाही तक जारी रहती है, हमें अपनी पुस्तक के अंतिम विभाजन को देखना चाहिए: दाऊद की स्थायी राजशाही।

जैसा कि हमने देखा, हमारे लेखक ने यह समझाने के लिए शाऊल की विफलताओं पर प्रकाश डाला कि परमेश्वर ने शाऊल और उसके वंश को इस्राएल के सिंहासन से क्यों तिरस्कृत किया। तुलनात्मक रूप से, हालांकि, शमूएल की पुस्तक में दाऊद का चित्रण इससे अधिक संतुलित है। यह दाऊद के सकारात्मक गुणों और उसकी उपलब्धियों पर बहुत ध्यान देता है, जैसे कि युद्ध में उसकी जीत और परमेश्वर के सामने उसकी विनम्रता। लेकिन यह दाऊद की गंभीर नैतिक विफलताओं और जिन मुसीबतों को वह अपने घराने और इज़राइल के लिए लाया उनको भी खुले तौर पर स्वीकार करती है। फिर भी, दाऊद की विफलताओं के बावजूद, हमारे लेखक ने जोर देकर कहा कि परमेश्वर ने दाऊद पर बहुत कृपा की। और, परमेश्वर की कृपा के कारण, दाऊद का वंश पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य को फैलाने में अगुवाई करने के लिए स्थिर रहेगा।

दाऊद की स्थायी राजशाही का विवरण 2 शमूएल 2-24 में पाया जाता है। यह हमारी पुस्तक का अब तक का सबसे लंबा हिस्सा है, और यह पहले दो विभाजनों के पैटर्न से हट कर है। यह तीन लंबे भागों में विभाजित होता है: अध्याय 2-9 में आशीषों वाले दाऊद के पहले के वर्ष, अध्याय 10-20 में अभिशापों वाले बाद के उसके वर्ष, और अध्याय 21-24 में दाऊद के शासन के जारी रहने वाले लाभों का सारांश।

पहले की आशीषें (2 शमूएल 2–9)। आशीष वाले दाऊद के पहले वर्षों के खंड में बताया गया है कि शाऊल की मृत्यु के बाद दाऊद, पहले हेब्रोन में और फिर यरूशलेम में राजा बना। इन सभी अध्यायों के दौरान, परमेश्वर ने दाऊद और इस्राएल को उसके प्रति दाऊद की विश्वासयोग्यता के प्रत्युत्तर में आशीषित किया। दाऊद ने इस्राएल के शत्रुओं पर कई जीत हासिल की। और यद्यपि इस्राएल के भीतर दाऊद के खिलाफ विद्रोह था, फिर भी उसका समर्थन बढ़ गया, यहाँ तक कि उन लोगों से भी जिन्होंने शाऊल और उसके घराने की सेवा की थी। आशीषों वाले दाऊद के पहले के वर्षों का शिखर बिन्दु परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी कि दाऊद इस्राएल के स्थायी शाही परिवार का प्रमुख होगा। 2 शमूएल 7:16 में नातान नबी के माध्यम से परमेश्वर ने जो दाऊद से कहा उसे सुनिए:

तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा। तेरी गद्दी सदैव बनी रहेगी (2 शमूएल 7:16)।

यहाँ पर, शाऊल और उसके घराने की परमेश्वर द्वारा स्थायी अस्वीकृति के विपरीत, परमेश्वर ने सत्यनिष्ठा में प्रतिज्ञा की कि दाऊद के घराने और राज्य को दृढ़ किया जाएगा और उसका राजगद्दी बनी रहेगी। और दो बार, परमेश्वर ने प्रमाणित किया कि यह “सदा” के लिए सत्य रहेगा, — इब्रानी में *अद ओलाम* (עַד־עוֹלָם)।

अब, अध्याय 7 में दूसरे स्थान पर, परमेश्वर ने चेतावनी दी कि यदि दाऊद के शाही पुत्र उससे दूर हुए, तो वह उन्हें कुछ समय के लिए सज़ा देगा। और यह खतरा यहूदा की बंधुवाई में नाटकीय रूप से पूरा हुआ। लेकिन परमेश्वर ने दाऊद को इस प्रतिज्ञा के साथ आशीषित किया कि उसका घराना कभी भी पूरी रीति से नहीं मिटेगा। चाहे भविष्य में कुछ भी हो, वह सदा बना रहेगा।

बाद के अभिशाप (2 शमूएल 10–20)। आशीषों वाले पहले के वर्षों के बाद, 2 शमूएल 10–20 में, दाऊद की स्थायी राजशाही का दूसरा भाग अभिशाप वाले उसके बाद के वर्षों को बताता है। ये अध्याय सुपरिचित हैं क्योंकि वे दाऊद के शाही शक्ति के सबसे बुरे दुरुपयोग को शामिल करते हैं: बतशेबा के साथ व्यभिचार और बतशेबा के पति हित्ती ऊरिय्याह की हत्या करने का उसका पाप। इन दुरुपयोगों के कारण, परमेश्वर ने बतशेबा के पहले पुत्र की मृत्यु के द्वारा दाऊद को सज़ा दी। लेकिन दाऊद की ईमानदारी से पश्चाताप के प्रति परमेश्वर ने भी दया के साथ उत्तर दिया, जबकि उसने चेतावनी दी कि दाऊद के राज्य के ऊपर समस्या आएंगी। और निश्चित रूप से वे आईं। दाऊद के पाप के कारण उसके परिवार और इस्राएल के पूरे राष्ट्र ने दाऊद के पूरे जीवन भर दुःख भोगा। फिर भी, जैसा कि हम 2 शमूएल 12:24-25 में पढ़ते हैं, यहाँ तक कि दाऊद के राज के इस भाग में भी, परमेश्वर ने दाऊद के लिए स्थायी राजवंश की अपनी प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ा था। इस पद को सुनिए:

[बतशेबा] के एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम सुलैमान रखा। वह यहोवा का प्रिय हुआ, और उसने नातान भविष्यद्वक्‍ता के द्वारा सन्देश भेज दिया; और उसने यहोवा के कारण उसका नाम यदिद्याह रखा (2 शमूएल 12:24-25)।

“दाऊद के पुत्र का राजगद्दी वाला नाम सुलैमान था, अर्थात, “शांति का व्यक्ति।” लेकिन, नातान भविष्यद्वक्‍ता के द्वारा, यहोवा ने उसका नाम “यदिद्याह” रखा, अर्थात “यहोवा का प्रिय,” “क्योंकि यहोवा ने उससे प्रेम किया।” सुलैमान के लिए परमेश्वर ने विशेष प्रेम ने पुष्टि की कि परमेश्वर का अनुग्रह दाऊद और उसके शाही वंश के प्रति जारी रहेगा।

जारी रहने वाले लाभ (2 शमूएल 21–24)। दाऊद के सकारात्मक शुरूआती वर्षों और उसके परेशानी वाले बाद के वर्षों का वर्णन करने के बाद, शमूएल के लेखक ने 2 शमूएल 21–24 में अपने श्रोताओं को दाऊद के शासन में जारी रहने वाले लाभों के सारांश को दिया। कई व्याख्याकारों ने इस सारांश को शमूएल की पुस्तक के लिए एक "परिशिष्ट" कहा है। इसमें ऐसी घटनाएँ शामिल हैं जो दाऊद के शासनकाल के विभिन्न समयों पर हुईं और उन्हें कालानुक्रमिक के बजाय विषयानुसार व्यवस्थित करती हैं।

इन अध्यायों में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने दाऊद के माध्यम से विशेष प्रकाशन दिए जिन्होंने उसके राजवंश के सुरक्षित भविष्य की पुष्टि सभी युगों के लिए की। परमेश्वर ने उसे शक्तिशाली योद्धा भी दिए जिन्होंने महान जीत को हासिल किया। और परमेश्वर ने दाऊद को एक ऐसे राजा के रूप में अभिषिक्त किया जिसकी प्रार्थनाओं ने पूरे देश के लिए क्षमा एवं चंगाई को हासिल किया। हमारी पुस्तक के मूल श्रोताओं पर स्थायी छाप छोड़ने के लिए ये सकारात्मक उपलब्धियां दाऊद के शासन के अंत में दिखाई देते हैं। दाऊद और उसके वंशजों ने इस्राएल को जो परेशानियां दीं, उसके बावजूद दाऊद के शासन से जुड़े लाभ मिटे नहीं थे। दाऊद के पूरे जीवन भर उसके प्रति परमेश्वर के अनुग्रह ने उस तरह की आशीषों को दिखाया जो कि दाऊद के घराने से धर्मी राजा इस्राएल के लिए अभी भी ला सकते थे। शमूएल के लेखक ने 2 शमूएल 22:51 में इस विषय को सामने रखा। वहाँ, दाऊद ने इन वचनों को कहा:

[परमेश्वर] अपने ठहराए हुए राजा का बड़ा उद्धार करता है, वह अपने अभिषिक्‍त दाऊद, और उसके वंश पर युगानुयुग करुणा करता रहेगा (2 शमूएल 22:51)।

यह पद 1 शमूएल 2:10 की ओर इंगित करती है। आपको याद होगा कि हमारी पुस्तक के आरंभ में, हमारे लेखक ने हन्ना के विश्वास को दर्ज किया कि परमेश्वर यहोवा “अपने राजा” के सींग को ऊँचा करने और “अपने अभिषिक्‍त” को विजय देने के द्वारा “पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा।” यहाँ, 2 शमूएल 22:51 में, दाऊद ने हन्ना के विश्वास को यह कहने के द्वारा दोहराया कि यहोवा बड़ा उद्धार करता है — अर्थात युद्ध में विजय के माध्यम से बड़ा उद्धार। और यह उद्धार “उसके राजा” को तब मिलता है जब यहोवा “अपने अभिषिक्त पर करुणा करता है।” लेकिन दाऊद की प्रशंसा हन्ना की प्रशंसा से एक कदम आगे गई। उसने परमेश्वर के उद्धार एवं करुणा के प्राप्तकर्ताओं के रूप में “दाऊद और उसके वंश” की पहचान की। और उसने घोषणा की कि वे इन आशीषों को “युगानुयुग” प्राप्त करेंगे।

शमूएल की पुस्तक की संरचना और विषयवस्तु का हमारा अवलोकन हमें इसकी बनावट की दूसरी विशेषता की ओर ले जाता है: हमारी पुस्तक का सर्वव्यापक उद्देश्य। हमारे लेखक ने अपने मूल श्रोताओं को प्रभावित करने की आशा कैसे की?

सर्वव्यापक उद्देश्य

जब लेखक शमूएल की पुस्तक जैसी लंबी एवं जटिल पुस्तक की रचना करते हैं, तो उनके पास अनगिनत लक्ष्य होते हैं। वे अपने पाठकों को सूचित करने के लिए, अपने पाठकों के व्यवहार को बदलने के लिए, और विभिन्न तरीकों से उनकी भावनाओं को प्रभावित करने के लिए अपनी पुस्तकों को आकार देते हैं। और शमूएल की पुस्तक कोई अपवाद नहीं है। हमारी पुस्तक के छोटे अंशों ने उन अनगिनत विशिष्ट मुद्दों को उठाया, जिनके पास इसके मूल श्रोताओं के जीवनों के लिए निहितार्थ थे। लेकिन इसी समय पर, शमूएल के लेखक ने अपनी पुस्तक के हर छोटे अंश को एक एकीकृत, सर्वव्यापक उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए बुना।

हमारे लेखक के सर्वव्यापक उद्देश्य को कई तरीकों में सारांशित किया जा सकता है, लेकिन इस श्रृंखला में, हम इसे इस तरह प्रस्तुत करेंगे:

शमूएल के लेखक ने समझाया के किस प्रकार राजशाही के लिए इस्राएल का बदलाव दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा में परिपूर्ण हुआ, ताकि इस्राएल दाऊद के घराने के धर्मी शासन में परमेश्वर के राज्य के लिए अपनी आशाओं को रखेगा।

जैसा कि यह सारांश बताता है, बड़े पैमाने पर हमारे लेखक का उद्देश्य दुगुना था। एक ओर, उसने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि राजशाही के लिए इस्राएल का बदलाव दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा में परिपूर्ण हुआ। दूसरी ओर, उसने लिखा ताकि इस्राएल दाऊद के घराने के धर्मी शासन में परमेश्वर के राज्य के लिए अपनी आशाओं को रखेगा। आइए हमारे लेखक के उद्देश्य के दोनों पक्षों को समझते हैं।

जैसा कि हमने पहले कहा, शमूएल की पुस्तक उस बात को उजागर करती है जिसे हमने“पहले का संसार”— कहा है, वह सदी जिसमें परमेश्वर ने न्यायियों के युग से राजशाही के युग तक इस्राएलियों की अगुवाई की। दुःख की बात है, कि पूरे पुराने नियम में, प्राचीन इस्राएली अक्सर परमेश्वर के मार्गों से भटकते रहे क्योंकि वे भूल गए थे कि परमेश्वर ने अतीत में उनके लिए क्या किया था। और इसे जानकर, हमारा लेखक अपने मूल श्रोताओं को अतीत के विषय में एक सच्चा, पूरी तरह से विश्वसनीय विवरण देने के लिए सावधान था।

कहने की जरूरत नहीं है, कि राजशाही के लिए इस्राएल के बदलाव की सदी के दौरान घटित हुई हर घटना को बताना हमारे लेखक के लिए असंभव था। इसलिए, उसने इस्राएल में तीन प्रमुख अगुवों के जीवन काल पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय लिया: शमूएल, शाऊल और दाऊद। और उसने इस्राएल देश के लिए एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य को स्थापित करने के लिए इन तीन लोगों के जीवनों को संबोधित किया।

जैसा कि हमारा उद्देश्य सारांश बताता है, शमूएल, शाऊल, और दाऊद के जीवनों की सभी घटनाएं दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा में परिपूर्ण हुई। जब तक कि परमेश्वर ने दाऊद के साथ अपनी वाचा नहीं बाँधी तब तक राजशाही के लिए बदलाव पूरा नहीं हुआ।

अन्य श्रृंखलाओं में हमने विस्तार से समझाया कि कैसे पवित्र शास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर ने पृथ्वी पर अपने राज्य के प्रत्येक चरण को वाचाओं के माध्यम से संचालित किया। परमेश्वर ने आदम और नूह में पूरी मानवता के साथ वाचा बाँधी। उसने अब्राहम, मूसा और दाऊद में इस्राएल के लोगों के साथ वाचा बाँधी। और पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की, कि, इस्राएल की बंधुवाई की समाप्ती के बाद, परमेश्वर अपने लोगों के साथ एक नई वाचा बाँधेगा। इनमें से प्रत्येक वाचा का एक अलग महत्व था जो उन समयों के लिए उचित थे जिनमें वे बनाए गए थे। इस तरह, जैसे-जैसे प्रत्येक वाचा ने पहले वाली वाचा की नीतियों को शामिल किया, तो उन्होंने उन पहले वाली नीतियों को नए तरीकों से लागू किया।

फिर भी, एक या अन्य तरह से, परमेश्वर की सभी वाचाएं दिव्य परोपकारिता द्वारा शुरू हुई और बनाए रखी गई थीं। परमेश्वर के परोपकार के प्रत्युत्तर में उन सभी ने कृतज्ञतापूर्वक मानवीय निष्ठा की अपेक्षा की। और उन सभी ने आज्ञाकारिता के लिए आशीषों एवं अवज्ञा के लिए अभिशापों के परिणामों को प्रकट किया।

कुल मिलाकर, व्याख्याकार सहमत हैं कि 2 शमूएल 7:1-17 में, नातान की भविष्यवाणी, वह अवसर था, जब परमेश्वर ने दाऊद के साथ अपनी वाचा बाँधी। यह शब्द “वाचा” — इब्रानी में *बेरित* (בְרִית) — इस अनुच्छेद में नहीं दिखाई देता है। लेकिन आशीषों वाले दाऊद के शुरूआती वर्षों के शिखर के समय नातान ने इन वचनों को दाऊद तक पहुँचाया, और ये दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा की बुनियादी नीतियों को प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त, हमारी पुस्तक के लगभग अंत में, शमूएल के लेखक ने स्पष्ट रूप से दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा का उल्लेख किया। 2 शमूएल 23:5 को सुनिए जहाँ दाऊद ने इन वचनों को कहा:

[परमेश्वर] ने तो मेरे साथ सदा की एक ऐसी वाचा बाँधी है, जो सब बातों में ठीक की हुई और अटल भी है (2 शमूएल 23:5)।

जैसा कि दाऊद यहाँ पर कहता है, परमेश्वर ने उसके साथ “सदा की वाचा” बाँधी है — इब्रानी में *बेरित ओलाम* (בְרִית עוֹלָם)। यह वाचा कभी समाप्त नहीं होगी। यह “सब बातों में ठीक की हुई थी” ताकि यह एकदम “अटल” रहेगी। दूसरे शब्दों में, दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा ने गारंटी दी कि उसका घर सदा के लिए इस्राएल पर राज करेगा। जैसा कि भजन 89, 132 भी संकेत देते हैं, इस समय से आगे के लिए, दाऊद का वंश परमेश्वर के राज्य की एक स्थायी विशेषता थी।

उद्धार के इतिहास के लिए 2 शमूएल 7 में, दाऊद के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा बहुत महत्वपूर्ण है। सामान्य रूप से उद्धार के इतिहास को समझने में यह एक महत्वपूर्ण अध्याय है ... हम इस अध्याय में वह देखते हैं जिसे दाऊद की वाचा कहा जाता है। यह एक महत्वपूर्ण वाचा है जिसमें हम उद्धारकर्ता पर एक नया दृष्टिकोण देखते हैं, कि यह उद्धारकर्ता दाऊद का पुत्र होगा। पवित्र शास्त्र में “दाऊद का पुत्र” वाला शब्द कोई सामान्य शब्द नहीं है। हर बार जब आप “दाऊद का पुत्र” देखते हैं, तो “राजा” शब्द को याद रखना आवश्यक है। दाऊद राजा था, और इस अध्याय में, प्रभु ने उससे प्रतिज्ञा की कि उसका पुत्र राजगद्दी पर, हमेशा के लिए, राज्य के सिंहासन पर बैठेगा। दाऊद की संतांनों में से एक दाऊद के सिंहासन पर सदा के लिए राजा होगा।

— श्री शेरिफ अतेफ फाहिम, अनुवादित

परमेश्वर ने दाऊद और उसके घराने पर इस्राएल के स्थायी राजवंश के रूप में उन्हें स्थापित करने के द्वारा परोपकारिता दिखाई, लेकिन परमेश्वर ने उनकी निष्ठावान सेवा की भी अपेक्षा की। परिणामस्वरूप, वे अपनी आज्ञाकारिता के लिए परमेश्वर की आशीषों एवं अपनी अवज्ञा के लिए उसके अभिशापों के परिणामों के अधीन थे। 2 शमूएल 7:14-15 को और दाऊद के सिंहासन पर पहले वारिस, सुलैमान के संबंध में दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा में योग्यता को सुनिए:

यदि वह अधर्म करे, तो मैं उसे मनुष्यों के योग्य दण्ड से, और आदमियों के योग्य मार से ताड़ना दूँगा। परन्तु मेरी करुणा उस पर से ऐसे न हटेगी, जैसे मैं ने शाऊल पर से हटा ली थी और उसको तेरे आगे से दूर किया था (2 शमूएल 7:14-15)।

भजन 89, 132 में दाऊद के वंशजों से वफादारी की परमेश्वर की अपेक्षा पर इसी के समान ध्यान दिया गया है। लेकिन *इस* अनुच्छेद में, हम देखते हैं कि जब दाऊद का घराना अधर्म करता है तो परमेश्वर उनकी ताड़ना करेगा। वह दाऊद के घराने को “मनुष्यों के योग्य दण्ड से, और आदमियों के योग्य मार से ताड़ना देगा”; दूसरे शब्दों में, उनके शत्रुओं से क्लेश।

फिर भी, दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा की स्थापना के साथ, एक नया दिन आ गया था। जैसा कि परमेश्वर ने यहाँ पर कहा, दाऊद के घराने पर से उसकी “करुणा ... न हटेगी,” “जैसे [उसने] शाऊल पर से हटा ली थी।” इस तरह, हालांकि परमेश्वर ने शाऊल और उसके वंशजों को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया था, लेकिन उसने स्पष्ट किया कि वह दाऊद के घराने के लिए ऐसा कभी नहीं करेगा। उन क्लेशों के बावजूद जिन्हें दाऊद और उसके पुत्र इस्राएल पर लाए थे, दाऊद का वंश सदा के लिए परमेश्वर के सामने इस्राएल के लोगों का प्रतिनिधित्व करेगा।

जैसा कि हमने अभी देखा, हमारे लेखक ने राजशाही के युग के लिए इस्राएल के बदलाव की परिणति के रूप में दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा को प्रस्तुत किया। अब आइए उसके सर्वव्यापी उद्देश्य के दूसरे भाग की ओर मुड़ते हैं। उसने अपनी पुस्तक को लिखा ताकि इस्राएल दाऊद के घराने के धर्मी शासन में परमेश्वर के राज्य के लिए अपनी आशाओं को रखेगा।

शमूएल की पुस्तक का साहित्यिक उद्देश्य यह दिखाना था कि इसकी समस्याओं के बावजूद, उन क्लेशों के बावजूद जिन्हें दाऊद का घराना इस्राएल पर लाया था, इस्राएल, दाऊद के वंश पर भरोसा कर सकता है। लेखक यह दिखाना चाहता था कि शासन करने वाला राजवंश होने के लिए दाऊद और उसके घराने को परमेश्वर द्वारा चुना गया था, और फिर, अपनी पुस्तक के माध्यम से, यह दिखाना कि दाऊद के राजवंश की विफलताओं के बावजूद भी इस्राएल को दाऊद के वंश पर भरोसा करना चाहिए।

— डॉ. डेविड कोरया, अनुवादित

हम इस अध्याय में पहले की बातों से जानते हैं कि शमूएल के लेखक ने “उनके संसार” में उसके मूल श्रोताओं द्वारा सामना किए जाने वाली चुनौतियों को संबोधित करने के लिए अतीत के “पहले के संसार” के बारे में लिखा था। और चाहे वे विभाजित राज्य या बेबीलोन की बंधुवाई के दौरान रहते थे, एक बात स्पष्ट थी। इन सदियों के दौरान, परमेश्वर ने दाऊद के घराने के पापों के कारण अपने लोगों पर अनेक अभिशाप डाले। उन्हें विभाजन, आर्थित कष्ट, बीमारी और युद्ध में हार का सामना करना पड़ा। और आखिरकार, परमेश्वर के लोगों और दाऊद के घराने को प्रतिज्ञा किए हुए देश से निर्वासित कर दिया गया।

इन क्लेशों ने इस्राएल के अगुवों के लिए गंभीर प्रश्न खड़े किए। उन्हें क्या करना चाहिए? उन्हें मदद के लिए कहाँ जाना चाहिए? उनमें से कई लोगों ने उज्जवल दिनों का सारी आशा खो दी। दूसरों ने स्वयं पर, अन्य देवताओं पर, दूसरे राष्ट्रों के साथ गठजोड़ पर, नए शाही परिवारों पर — किसी पर भी भरोसा किया लेकिन दाऊद के असफल घराने पर नहीं। लेकिन शमूएल के लेखक ने जोर देकर कहा कि सिर्फ एक प्रतिक्रिया थी जो परमेश्वर को स्वीकार्य थी।

शुरूआत करने के लिए, उन्हें परमेश्वर के राज्य के लिए अपनी आशा को नहीं खोना था। हालांकि मूल श्रोताओं द्वारा सहे गए क्लेशों ने इस्राएल में कई लोगों के लिए इसे बहुत मुश्किल बना दिया था, फिर भी हमारे लेखक ने दृढ़ता से पुष्टि की कि परमेश्वर का राज्य विफल नहीं होगा।

शुरूआत के समय से, परमेश्वर ने यह प्रकट किया था कि जब मनुष्यों की वफादार सेवा के माध्यम से वह अपने शासन को पृथ्वी भर में स्थापित करेगा, तो इतिहास अपनी चरम अवस्था पर पहुँच जाएगा। मूसा ने आदम के साथ परमेश्वर की वाचा के अपने विवरण में इस मूलभूत विश्वास को सिखाया। परमेश्वर के स्वरूप में होने के तौर पर, पृथ्वी को भरने और उसे वश में करने के लिए, पूरे संसार भर में, अदन में, परमेश्वर की वाटिका के आश्चर्य को फैलाने के लिए आदम और हव्वा को अधिकृत किया गया था। नूह के साथ अपनी वाचा में, परमेश्वर ने इस अधिकार की पुनः पुष्टि की। पृथ्वी को वश में करना और इसे उसके स्वरूपों से भरना, पाप में पतित संसार में रह रहे परमेश्वर के वफादार लोगों का यह विशेषाधिकार एवं उनकी जिम्मेदारी थी। अब्राहम के साथ अपनी वाचा में, परमेश्वर ने प्रकट किया कि इस्राएल के लोग पृथ्वी पर एक ऐसा परिवार थे, जिन्हें संसार को परमेश्वर के राज्य में बदलने के लिए बाकी मानवता की अगुवाई करने हेतु चुना गया था। मूसा के साथ अपनी वाचा में, परमेश्वर ने इस्राएल के बारह गोत्रों को एक राष्ट्र में बदला और उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में रखा। यह भूमि मातृभूमि थी, जहाँ से वे परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाएंगे। और दाऊद के साथ अपनी वाचा में, परमेश्वर ने उसके शाही परिवार के घराने को स्थापित किया जो इस भव्य लक्ष्य की ओर इस्राएल के राष्ट्र की अगुवाई करेगा।

लेकिन जब शमूएल के लेखक ने अपनी पुस्तक लिखी, इस्राएल में कई लोगों ने दाऊद के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास करने में संघर्ष किया। इस्राएल के लोग परमेश्वर से विनाशकारी अभिशापों में जी रहे थे, और ये क्लेश उनके ऊपर दाऊद के घराने के अलावा किसी और माध्यम से नहीं आया था। इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि, अपनी पुस्तक के शुरूआती पृष्ठों पर, शमूएल के लेखक ने परमेश्वर के राज्य के भविष्य के बारे में हन्ना के भरोसे को बताया। 1 शमूएल 2:10 में हन्ना की प्रशंसा को फिर से सुनिए:

जो यहोवा से झगड़ते हैं वे चकनाचूर होंगे; वह उनके विरुद्ध आकाश में गरजेगा। यहोवा पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा; और अपने राजा को बल देगा, और अपने अभिषिक्‍त के सींग को ऊँचा करेगा (शमूएल 2:10)।

हन्ना ने परमेश्वर के विश्वव्यापी शासन की आशा नहीं खोई थी। उसने उस बात को देखा जो परमेश्वर उसके समय में कर रहा था और आश्वस्त थी कि, “यहोवा पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा।” और उसने इस पर विश्वास किया क्योंकि वह जानती थी कि महान विजय के साथ परमेश्वर “अपने राजा को बल देगा, और अपने अभिषिक्‍त के सींग को ऊँचा करेगा।”

अपनी पूरी पुस्तक में, शमूएल के लेखक ने अपने मूल श्रोताओं को हन्ना के उदाहरण का पालन करने की बुलाहट दी। उन्हें आशा नहीं छोड़नी थी। उन कष्टों के बावजूद जिन्हें उन्होंने सहा, इस्राएल को अपना विश्वास फिर से नया करना था कि परमेश्वर के राजा, उसके अभिषिक्त के माध्यम से, परमेश्वर का राज्य पूरे संसार भर में फैलेगा।

अब, एक महत्वपूर्ण शर्त है जिसे शमूएल की पुस्तक परमेश्वर के राज्य की इस आशा के बारे में प्रकट करती है। जैसे कि हमारा सारांश बताता है, इस्राएल की आशा को दाऊद के घराने के धर्मी शासन में होनी चाहिए। हमारे लेखक ने जोर दिया कि परमेश्वर के राज्य का भविष्य दाऊद के घराने में था, न कि किसी अन्य में। लेकिन इससे भी अधिक, परमेश्वर ने यह ठहराया कि यह शोभायमान भविष्य दाऊद के घराने के धर्मी शासन में था।

जैसा कि हमने पहले ध्यान दिया है, हमारे लेखक ने समझाया कि राजशाही के युग के लिए इस्राएल के बदलाव की परिणति दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा थी। और इस वाचा ने स्थापित किया कि दाऊद के पुत्रों ने चाहे जो कुछ भी किया हो, चाहे वे परमेश्वर से कितने भी दूर क्यों न चले गए हों, परमेश्वर दाऊद के वंश को किसी दूसरे के साथ प्रतिस्थापित नहीं करेगा। जब हम ध्यान में रखते हैं कि एक के बाद एक दाऊद के पुत्रों की विफलताओं के कारण मूल श्रोताओं को कितने क्लेश से गुजरना पड़ा, तो हम समझ सकते हैं कि इस विश्वास पर शमूएल के लेखक को क्यों जोर देना पड़ा। इस्राएल में कोई भी, यहाँ तक कि सबसे निष्ठावान भी, कैसे इस शाही परिवार पर विश्वास कर सकता है कि वह उनकी अगुवाई परमेश्वर के न्याय के तहत और अधिक कष्ट में न ले जा कर कहीं और करेगा? फिर भी, शमूएल के लेखक ने जोर देकर कहा कि इस्राएल को अन्य देशों के राजाओं की ओर नहीं देखना चाहिए और न उनके झूठे देवताओं की सेवा करनी चाहिए। इस्राएल को इस्राएल के भीतर भी किसी अन्य राजा की ओर नहीं देखना था — न तो शाऊल के वंशजों की ओर, न ही उन कई राजाओं की ओर जिन्होंने उत्तरी राज्य पर राज किया, अर्थात दाऊद के घराने से आए राजा के अलावा *किसी अन्य* की ओर नहीं।

बेशक, दाऊद के राजवंश पर इस विश्वास का अर्थ यह नहीं था कि परमेश्वर दाऊद के घराने से किसी भी राजा के माध्यम से अपने लोगों को आशीष देगा और पृथ्वी की छोर तक अपने राज्य को फैलाएगा। हरगिज़ नहीं। शमूएल के लेखक ने स्पष्ट किया कि स्वयं दाऊद परमेश्वर के अभिशापों के तहत आ गया जब उसने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया। इसके अतिरिक्त, हमारे लेखक और उसके मूल श्रोताओं ने जाना कि दाऊद के पुत्रों की विफलताओं के कारण विभाजित राज्य के क्लेश और बंधुवाई उन आ पड़ी थी। इसलिए, हमारे लेखक ने जोर देकर कहा कि इस्राएल को दाऊद का ऐसा पुत्र चाहिए जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने वाला हो — दाऊद का ऐसा पुत्र जो धार्मिकता में राज्य करने वाला हो। जिस तरह से हमारे लेखक ने 2 शमूएल 23:3-5 में इस्राएल की आशा को व्यक्त किया, उसे सुनिए। “दाऊद के अंतिम वचनों” में, हम पढ़ते हैं:

इस्राएल के परमेश्वर ने कहा है; इस्राएल की चट्टान ने मुझ से बातें की हैं: कि मनुष्यों में प्रभुता करनेवाला एक धर्मी होगा, जो परमेश्वर का भय मानता हुआ प्रभुता करेगा, वह मानो भोर का प्रकाश होगा जब सूर्य निकलता है, ऐसा भोर जिसमें बादल न हों, जैसा वर्षा के बाद निर्मल प्रकाश के कारण भूमि से हरी हरी घास उगती है। क्या मेरा घराना ईश्‍वर की दृष्‍टि में ऐसा नहीं है? उसने तो मेरे साथ सदा की एक ऐसी वाचा बाँधी है,  
जो सब बातों में ठीक की हुई और अटल भी है (2 शमूएल 23:3-5)।

यहाँ पर, जो दाऊद को कहना था, उसकी निश्चितता का परिचय देते हुए उसने शुरू किया। ये वचन उसकी राय नहीं थे। बल्कि, वे “इस्राएल के परमेश्वर,” “इस्राएल की चट्टान” से आए थे। और दाऊद आगे घोषणा करता है कि इस्राएल को ऐसे राजा की आशा करनी चाहिए जो उन तक परमेश्वर की आशीषों को लाएगा। जैसा कि उसने लिखा, ऐसा राजा अंधकार की लंबी रात के बाद “मानो भोर के प्रकाश के समान होगा” ऐसी भोर के समान जिसमें बादल न हों “मानो जब सूर्य निकलता है,” और “मानो उस वर्षा के समान होगा” जिसके कारण भूमि से हरी हरी घास उगती है। और ऐसा राजा उन्हें कहाँ मिल सकता था? दाऊद ने उत्तर दिया: “क्या मेरा घराना ईश्‍वर की दृष्‍टि में ऐसा नहीं है? क्योंकि उसने तो मेरे साथ सदा की एक वाचा बाँधी है।”

दाऊद के साथ परमेश्वर की सदा की वाचा के कारण, इस्राएल के लिए दाऊद के घराने के सिवाय परमेश्वर की आशीषों की कोई संभावना नहीं थी। लेकिन ये आशीषें दाऊद के घराने के सिर्फ किसी भी प्रतिनिधि के माध्यम से नहीं आएंगी। दाऊद के घराने से सिर्फ एक इस तरह का राजा था जो इस्राएल को उनके कष्टों से निकालकर परमेश्वर की आशीषों के अन्तर्गत ला सकता था। जैसा कि दाऊद ने इसे लिखा, वह ऐसा होना चाहिए जो कि “मनुष्यों में प्रभुता करनेवाला एक धर्मी होगा, जो परमेश्‍वर का भय मानता हुआ प्रभुता करेगा।” सिर्फ एक धर्मी राजा इस्राएल को परमेश्वर की दया के चमत्कारों में फिर से ला लाएगा। इस तरह, दाऊद के धर्मी पुत्र का शासन परमेश्वर की आशीषों के उंडेले जाने के लिए इस्राएल की एकमात्र आशा थी।

शमूएल की पुस्तक के लिए अपनी प्रस्तावना में अभी तक हमने पुस्तक की पृष्ठभूमि एवं बनावट के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं का पता लगाया है। अब हम अपने अध्याय के तीसरे प्रमुख विषय को देखेंगे: शमूएल की पुस्तक का मसीही अनुप्रयोग।

मसीही अनुप्रयोग

जैसा कि हमने देखा, शमूएल के लेखक ने अपनी पुस्तक को ऐसे समय में लिखा जब प्राचीन इस्राएली — या तो विभाजित राजशाही के दौरान या बेबीलोन की बंधुवाई के दौरान परमेश्वर के दंड को भोग रहे थे। और उसने मुख्य रूप से इसे ऐसा डिजाइन किया जिससे कि इस्राएल के अगुवे दाऊद के शाही परिवार में अपनी आशाओं को रखने के लिए लोगों का मार्गदर्शन करेंगे। बेशक, हमारे लेखक के उद्देश्य की पहचान करना उसकी पुस्तक की कई विशेषताओं को समझने में हमारी मदद करता है। लेकिन जैसा अक्सर होता है, जब पवित्र शास्त्र के छात्र पहली बार शमूएल की पुस्तक के मूल अभिविन्यास पर ध्यान केंद्रित करना शुरू करते हैं, तो अपने मसीही जीवन में इसे लागू करना उन्हें मुश्किल लगता है। उन लोगों की तुलना में जिन्होंने पुस्तक को पहली बार प्राप्त किया हम एक अलग परिस्थिति में रहते हैं। हम मसीह में नई वाचा के द्वारा परमेश्वर के प्रति प्रतिबद्ध हैं। और परमेश्वर के लोग अब पृथ्वी के सभी देशों में फैल गए हैं। इसलिए शमूएल की पुस्तक की प्रासंगिकता हमारे लिए क्या है? नए नियम के विश्वासियों के रूप में, जब हम शमूएल की पुस्तक को लागू करते हैं तो हमें किन तरीकों को अपनाना चाहिए?

शमूएल की पुस्तक के मसीही अनुप्रयोग के बारे में इन प्रश्नों के उत्तर देने के कई तरीके हैं। लेकिन, समय हमें सिर्फ बाइबल की उन दो शिक्षाओं का उल्लेख करने की अनुमति देगा जो पुस्तक के मूल अर्थ को नए नियम के हमारे विश्वास के साथ जोड़ते हैं। सबसे पहले, हम दिव्य वाचाओं के बाइबल आधारित अवधारणा पर विचार करेंगे, और दूसरा हम परमेश्वर के राज्य की अवधारणा का पता लगाएंगे। आइए दिव्य वाचाओं के साथ शुरू करते हैं।

दिव्य वाचाएं

इससे पहले इस अध्याय में, हमने उल्लेख किया कि शमूएल का लेखक उन पाँच प्रमुख दिव्य वाचाओं से परिचित था जिन्हें परमेश्वर ने बाइबल के इतिहास में पहले ही स्थापित कर दिया था। ये आदम और नूह में पूरी मानवता के साथ वाचाएं थीं और अब्राहम, मूसा एवं दाऊद में इस्राएल के साथ उसकी विशेष वाचाएं थीं। वह इससे भी अवगत था कि इस्राएल के भविष्यद्वक्ताओं ने एक और वाचा की भविष्यवाणी की है — नवीकरण की वह वाचा जिसे परमेश्वर अपने लोगों के साथ इस्राएल की बंधुवाई के अंत के बाद बाँधेगा। अक्सर हम “इस वाचा” का वर्णन नई वाचा के रूप में करते हैं। इस भविष्य वाली वाचा का उल्लेख स्पष्ट रूप से होशे 2:18 में विभाजित राजशाही के दौरान, साथ ही बाद में यशायाह 54:10 और यहेजेकेल 34:25; 37:26 जैसे अनुच्छेदों में भी किया गया था।

राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना (1 शमूएल 1-7)

अब, शमूएल का पहला भाग — राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना — “वाचा” शब्द का उपयोग नहीं करता है। लेकिन हमारे लेखक ने इस भाग में प्रत्येक घटना को उस वाचा के संदर्भ में प्रस्तुत किया जिसे परमेश्वर ने सिनै पर्वत पर मूसा के साथ बाँधा था। संक्षेप में, मूसा वाली वाचा ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में रहने वाले एक राष्ट्र के रूप में इस्राएल के प्रति परमेश्वर की परोपकारिता की गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित किया। इसने मूसा की व्यवस्था के अनुसार राष्ट्र के लिए मानवीय निष्ठा की शर्तों को बताया। और इसने अभिशापों एवं आशीषों के उन परिणामों की ओर ध्यान आकर्षित किया जो उनकी अवज्ञा एवं आज्ञाकारिता के जवाब में राष्ट्र पर आएंगी।

जैसा कि हम बाद के अध्यायों में देखेंगे, राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना में, हमारे लेखक ने इस्राएल के नए अगुवे के रूप में शमूएल को खड़ा करने में परमेश्वर की परोपकारिता पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया। उसने मानवीय निष्ठा, विशेष रूप से आराधना के लिए मूसा के नियमों के लिए मूसा की व्यवस्था के मानक को भी बरकरार रखा। और उसने इन मानकों के प्रति अवज्ञा एवं आज्ञाकारिता के लिए अभिशापों एवं आशीषों के परिणामों को बताया। उसने समझाया कि एली के परिवार पर उनकी अवज्ञा के कारण परमेश्वर का अभिशाप कैसे पड़ा और कैसे उनकी अवज्ञा इस्राएल देश पर अभिशापों को लाती हैं। और उसने यह भी बताया कि आराधना के लिए मूसा के नियमों के प्रति हन्ना और शमूएल की आज्ञाकारिता के लिए परमेश्वर की आशीषें उन पर कैसे आती हैं और कैसे उनके कार्य इस्राएल के लिए आशीषों का कारण बनते हैं।

शाऊल की असफल राजशाही (1 शमूएल 8-2 शमूएल 1)

इसके अतिरिक्त, हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक के दूसरे भाग — शाऊल की असफल राजशाही में भी परमेश्वर की वाचा की अपील की है। जैसा कि हम इसके बाद वाले अध्यायों में और चर्चा करेंगे, हमारी पुस्तक के इस भाग में, परमेश्वर ने एक राजा के लिए इस्राएल के अनुरोध को स्वीकार करते हुए उन पर परोपकारिता दिखाई। हमारे लेखक ने मानवीय निष्ठा की शर्तों पर अपने ध्यान आकर्षण का विस्तार किया, जिसमें न सिर्फ *आराधना* के लिए मूसा के नियमों को, बल्कि इस्राएल में शाही अधिकार के दुरुपयोग के ख़िलाफ़ उसके नियमों को भी शामिल किया। यहाँ पर, हमारे लेखक ने शाऊल की घोर अवज्ञा के ख़िलाफ़ परमेश्वर के अभिशापों को प्रकट किया और बताया कि कैसे शाऊल के कार्य इस्राएल पर अभिशापों का कारण बनें। उसने दाऊद के ऊपर उसकी विनम्र आज्ञाकारिता के लिए परमेश्वर की आशीषों पर प्रकाश डाला और बताया कि कैसे दाऊद के कार्य इस्राएल देश पर आशीषों का कारण बनें।

दाऊद की स्थायी राजशाही (2 शमूएल 2–24)

शमूएल के तीसरे भाग में — दाऊद की स्थायी राजशाही — हमारे लेखक ने दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा पर प्रकाश डाला। इस वाचा में, परमेश्वर ने दाऊद और उसके राजवंश की नई केंद्रियता को प्रदर्शित करने के लिए मूसा में अपनी वाचा की गतिशीलता को पुनः संगठित किया। जैसा कि हम और स्पष्टता से अपने अगले अध्यायों में देखेंगे, हमारे लेखक ने इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया कि इस्राएल के स्थायी राजवंश के रूप में दाऊद के घराने को स्थापित करने के द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल पर महान परोपकारिता दिखाई। बेशक, मूसा की व्यवस्था के मानक, विशेष रूप से आराधना और राजशाही के लिए उसके नियम अभी भी प्रभावी थे। इस तरह, हमारे लेखक ने आराधना के लिए मूसा के नियमों और शाही अधिकार के दुरुपयोग के ख़िलाफ़ उसके प्रतिबंधों में मानवीय निष्ठा की शर्तों पर अपने ध्यान केंद्रण को जारी रखा। लेकिन इस्राएल के स्थायी शाही परिवार के रूप में दाऊद के घराने की परमेश्वर की स्थापना ने इस बात को गहराई से प्रभावित किया कि परमेश्वर ने अपनी वाचाओं के परिणामों को कैसे लागू किया। उस समय से, दाऊद और उसके घराने ने परमेश्वर के सामने इस्राएल के सभी बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व किया। और, परिणामस्वरूप, जिन अभिशापों एवं आशीषों को इस्राएल ने प्राप्त किया वे दाऊद के घराने की अवज्ञा एवं आज्ञाकारिता पर बहुत अधिक निर्भर थे।

मूसा और दाऊद में परमेश्वर की वाचाओं की गतिशीलता पर हमारे लेखक का ध्यान आकर्षण शमूएल की पुस्तक और मसीही विश्वास के बीच आवश्यक संबंधों को प्रदान करता है। हमने अन्य श्रृंखलाओं में इन संबंधों के बारे में अधिक विस्तार से समझाया है, लेकिन यहाँ पर सारांशित करने में यह हमारी मदद करेगा। नए नियम की शिक्षाओं के अनुसार, उस विशेष भूमिका पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा जिसे यीशु बाइबल के इतिहास में पूरा करता है, नई वाचा परमेश्वर की पूर्व वाचाओं की गतिशीलता को पुनः संगठित करती है। दाऊद के सिंहासन के अंतिम, धर्मी वारिस के रूप में, यीशु भयानक कष्टों के समय़ पर परमेश्वर के लोगों के लिए उसकी सबसे महान परोपकारिता का प्रदर्शन था। यीशु ने दुःख के अपने पूरे जीवन और क्रूस पर अपनी मृत्यु में मानवीय निष्ठा के हर मानक को पूरा किया। और अपनी सिद्ध आज्ञाकारिता के कारण, यीशु ने अपने पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण में पिता से अनंत आशीषों को प्राप्त किया।

परमेश्वर ने 2 शमूएल 7 में दाऊद से एक महान एवं अद्भुत प्रतिज्ञा की जिसकी जबरदस्त अहमियत थी, क्योंकि इसने आगे चलकर पूरे उद्धार के इतिहास को आकार दिया ... इस प्रतिज्ञा ने यीशु मसीह की आशा की, जो दाऊद का वंशज था और जिसने इससे महान मंदिर का निर्माण किया, ऐसा मंदिर नहीं जो पत्थर का बना हो, लेकिन परमेश्वर के लोगों का मंदिर, अर्थात कलीसिया ... और यह यीशु मसीह जो दाऊद का वंशज था, मृतकों में से जी उठा और दाऊद के राज्य पर सदा के लिए राज कर रहा है। इस प्रकार, 2 शमूएल 7 वाली प्रतिज्ञा दूर तक प्रभाव डालने वाली थी और इसने बाकी के पुराने नियम के साथ-साथ नए नियम के परिप्रेक्ष्य को आकार दिया, जो एक से अधिक बार, महत्वपूर्ण स्थानों में, कहता है कि यीशु मसीह दाऊद की संतान है।

— रेव्ह. डा. ईमद ए. मिकाएल, अनुवादित

इसलिए, जैसे शमूएल की पुस्तक इस्राएल के अगुवों, शमूएल, शाऊल एवं दाऊद की वाचा वाली महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारती है, वैसे ही हमें नई वाचा के सिद्ध मध्यस्थ के रूप में मसीह को स्वीकार करना चाहिए। शमूएल की पुस्तक मानवीय निष्ठा की परमेश्वर के शर्त की अवज्ञा एवं आज्ञाकारिता दोनों के लिए इस्राएल के अगुवों के कई उदाहरणों को पेश करती है। लेकिन दाऊद के महान पुत्र के रूप में, यीशु शमूएल की पुस्तक में अवज्ञा के हर उदाहरण के एकदम विपरीत है। इसके अतिरिक्त, यीशु की अतुलनीय सिद्धता शमूएल की पुस्तक में आज्ञाकारिता के हर एक उदाहरण से बहुत बढ़कर है। यही कारण है कि नया नियम हमसे यीशु पर अपनी सभी आशाओं को लगाने के लिए कहता है। यीशु निश्चित रूप से हर सच्चे विश्वासी को उन अभिशापों से सदा के लिए मुक्ति दिलाएगा जिन्हें परमेश्वर अंतिम न्याय में उँडेलेगा। और यीशु हर सच्चे विश्वासी को अनंत काल की आशीषें देगा जिन्हें परमेश्वर अंतिम न्याय में प्रदान करेगा।

इसके अलावा, शमूएल की पुस्तक हर एक प्राचीन इस्राएली के दैनिक जीवनों में परमेश्वर की वाचाओं की गतिशीलताओं की ओर भी इशारा करती है। और इसी तरह, नया नियम समझाता है कि कैसे नई वाचा की गतिशीलताएं मसीह के अनुयायियों के दैनिक जीवनों पर लागू होते हैं। मसीह के महिमा में लौटने से पहले, शमूएल की पुस्तक में उसके लोगों के लिए परमेश्वर की परोपकारिता का हर एक प्रदर्शन हमें उन तरीकों की याद दिलाता है जिनमें परमेश्वर अपनी कलीसिया के लिए परोपकार दिखाता है। शमूएल की पुस्तक में मानवीय निष्ठा की हर एक शर्त हमें याद दिलाती है कि कैसे नया नियम, मसीह में जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिए किया है उसके लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञतापूर्ण निष्ठा दिखाने की माँग करता है। और हर बार जब शमूएल की पुस्तक इस्राएल पर आए अस्थायी अभिशापों एवं आशीषों की बात करती है, तो हम इस बात पर विचार कर सकते हैं कि कैसे मसीह अपने अतुलनीय बु्द्धि में, अपनी कलीसिया को अनुशासित करने के लिए अस्थायी अभिशापों और अपनी कलीसिया को पुरस्कृत करने के लिए अस्थायी आशीषों को उँडेलता है। इसलिए, जब हम नए नियम के प्रकाश में शमूएल की पुस्तक का अध्ययन करते हैं, तो हमारे पास इसे अपने दैनिक जीवनों में लागू करने के पर्याप्त अवसर हैं।

दिव्य वाचाओं पर इसके जोर देने के कारण शमूएल की पुस्तक का मसीही अनुप्रयोग बहुत हद तक संभव है। लेकिन हमें यह भी देखना चाहिए कि परमेश्वर के राज्य का बाइबल वाला विषय आज इस पुस्तक को हमारे जीवनों में लागू करने में हमारी मदद कैसे करता है।

परमेश्वर का राज्य

जैसा कि हमने कहा, कि शमूएल के लेखक ने एक सर्वव्यापक लक्ष्य को ध्यान में रखकर अपनी पुस्तक के हर पहलू को आकार दिया। उसने दाऊद के घराने के धर्मी शासन के माध्यम से परमेश्वर के राज्य के प्रसार की आशा के लिए इस्राएल को बुलाहट दी। दुःख की बात है, कि कई आधुनिक मसीही लोगों ने उस दर्शन को खो दिया है कि मसीही विश्वास में परमेश्वर के राज्य का प्रसार कितना महत्वपूर्ण है। और इसलिए, हमें स्वयं अपने जीवनों के लिए शमूएल की पुस्तक के इस प्रमुख विषय को लागू करने में कठिनाई होती है। लेकिन वास्तव में, मसीह और पहली सदी के प्रेरितों एवं भविष्यद्वक्ताओं ने एक बात को पूरी तरह से स्पष्ट किया: नए नियम का विश्वास परमेश्वर के राज्य के लिए कभी भी आशा को नहीं छोड़ता है। इसके विपरीत, नए नियम में यह एकदम स्पष्ट है कि शमूएल के लेखक ने जिस आशा को अपने मूल श्रोताओं के सामने रखा वह मसीह के राज्य में पूरा हुआ।

यह देखने के लिए कि यह कैसे सच है, हमें शमूएल की पुस्तक और नए नियम के युग के बीच में इस्राएल में क्या हुआ था उसे ध्यान में रखना है। इतिहास, एज्रा, हाग्गै और जकर्याह की पुस्तकें हमें बताती हैं कि 538 ई.पू. के लगभग इस्राएल के सभी गोत्रों के प्रतिनिधि बेबीलोन से यरूशलेम को लौट आए। वे अपने साथ बड़ी उम्मीदों को लेकर आए थे कि दाऊद का वंशज, जरुब्बाबेल, परमेश्वर के राज्य के पुनर्निर्माण और विस्तार में उनका नेतृत्व करेगा। लेकिन इन्हीं पुस्तकों ने स्पष्ट किया कि जरुब्बाबेल धार्मिकता में राज्य करने में विफल रहा। उसके नेतृत्व में कुछ शुरूआती उपलब्धियों के बाद, हम उसके बारे में और अधिक कुछ नहीं जानते हैं। इस्राएल के लोग परमेश्वर से लगातार दूर होते रहे और, परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने उन पर और अधिक अभिशापों को उँडेला। परमेश्वर के अधिकांश लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश से बाहर बने रहे, और कुछ जो वापस लौटे अन्यजाति राष्ट्रों एवं उनके झूठे देवताओं के अत्याचार तले पीड़ित हुए। पाँच से अधिक शताब्दियों के लिए बेबीलोन, मादी और फारसी, यूनानी, और रोमन लोगों ने परमेश्वर के लोगों के ऊपर राज किया। दाऊद का कोई भी धर्मी पुत्र प्रकट नहीं हुआ, और परमेश्वर का राज्य पृथ्वी के ऊपर से लगभग गायब हो गया।

फिर भी, इन सदियों के दौरान हमेशा इस्राएलियों के कुछ बचे हुए लोग थे जो विश्वास करते रहे। वे जानते थे कि परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से प्रतिज्ञा की थी कि बाद के दिनों में, इतिहास के अंतिम चरण में, वह दाऊद के धर्मी पुत्र को उनके लिए भेजेगा। यह धर्मी पुत्र पाप के लिए अंतिम निर्णायक प्रायश्चित करेगा, और परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन लेने के लिए खड़ा करेगा। दाऊद के सिंहासन से वह परमेश्वर के राज्य को पूरे संसार भर में फैलाएगा और अनंत दंड एवं आशीषों को लाएगा।

और, निस्सन्देह, यह प्रतिज्ञा मसीही सुसमाचार के केंद्र में है — मसीह में परमेश्वर के राज्य का शुभ संदेश। 500 से अधिक वर्षों के इंतजार के बाद, दाऊद का सिद्ध पुत्र, यीशु, पैदा हुआ। वह इस्राएल का धर्मी राजा है, जो परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैला रहा है।

मसीह में परमेश्वर के राज्य के बारे में यह प्रमुख शिक्षा नए नियम के लेखकों के मनों में प्रमुखता से थी। स्पष्ट रूप से, इन लेखकों ने यीशु को उन सभी आशाओं की पूर्ति के रूप में देखा जिसे शमूएल की पुस्तक ने दाऊद के घराने पर रखा। उदाहरण के लिए, लूका, जिसने लूका का सुसमाचार एवं प्रेरितों की पुस्तक को लिखा, उसने स्पष्ट रूप से कई बार शमूएल की पुस्तक से घटनाओं की मसीह द्वारा पूर्ति का उल्लेख किया। अब, शमूएल का पहला भाग — राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना — “वाचा” शब्द का उपयोग नहीं करता है। लूका 1:46-55 में, हम परमेश्वर की प्रशंसा के विषय में मरियम के गीत को पढ़ते हैं जब उसने यीशु के जन्म की आशा की। पद 51-53 को सुनिए जहाँ मरियम ने इन वचनों को कहा:

[परमेश्वर] ने अपना भुजबल दिखाया, और जो अपने आप को बड़ा समझते थे, उन्हें तितर-बितर किया। उसने बलवानों को उनके सिंहासनों से गिरा दिया; और दीनों को ऊँचा किया। उसने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्‍त किया, और धनवानों को छूछे हाथ निकाल दिया (लूका 1:51-53)।

कई व्याख्याकारों ने ध्यान दिया है कि मरियम के गीत का यह एवं अन्य भाग 1 शमूएल 2:1-10 में पाए जाने वाले शमूएल के जन्म के समय हन्ना के प्रशंसा वाले गीत के समानांतर हैं। हन्ना ने इस बात की सराहना की कि कैसे परमेश्वर ने अपने शत्रुओं पर अभिशाप देकर और अपने विश्वासयोग्य लोगों को आशीषें देने के द्वारा एक नए दिन की शुरूआत की थी। और मरियम ने इस तथ्य की सराहना की कि परमेश्वर अपने पुत्र, यीशु के जन्म के माध्यम से ऐसा ही कर रहा था। इसी तरह, लूका का सुसमाचार भी जब यह यीशु की युवा अवस्था का वर्णन करता है तो राजशाही के लिए शमूएल की प्रस्तावना को संदर्भित करता है। लूका 2:52 में, लूका ने यीशु के बचपन के वर्षों के विषय में यह लिखा:

यीशु बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्‍वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया। (लूका 2:52)।

अब 1 शमूएल 2:26 को सुनिए जहाँ हम इन वचनों को पढ़ते हैं:

परन्तु शमूएल बालक बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनों उससे प्रसन्न रहते थे (1 शमूएल 2:26)।

यह पद शमूएल का वर्णन करता है जब परमेश्वर ने उसे इस्राएल में नेतृत्व के लिए खड़ा किया और एली और उसके पुत्रों पर अभिशाप दिए। और लूका ने यीशु का वर्णन बहुत कुछ उसी तरह किया जब परमेश्वर ने उसे इस्राएल के अगुवे के रूप में यीशु के समय में इस्राएल के हठधर्मी अगुवों के विपरीत खड़ा किया।

दाऊद के धर्मी पुत्र के रूप में यीशु के लिए ध्यान आकर्षित करने हेतु लूका ने शमूएल की पुस्तक के दूसरे भाग — शाऊल की असफल राजशाही — से भी निष्कर्ष निकाले। लूका 6:1-5 में, लूका ने लिखा कि कैसे फरीसियों ने यीशु का पीछा किया और उस पर एवं उसके शिष्यों पर सब्त तोड़ने का आरोप लगाया। पद 3 में, यीशु ने स्वयं की तुलना दाऊद से करने के द्वारा अपने कार्यों का बचाव किया, कि दाऊद और उसके साथियों ने जब शाऊल द्वारा उनका पीछा किया गया तो भेंट की पवित्र रोटियाँ लेकर खाई। हम इस कहानी को 1 शमूएल 21:1-6 में पाते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, जब शाऊल ने दाऊद को मारना चाहा तो परमेश्वर उसके ऊपर अभिशाप लाया था, लेकिन उसने दाऊद को उसके निर्दोष होने के लिए आशीषित किया। इस तरह, शमूएल की पुस्तक में यीशु के संदर्भ को ध्यान में रखने के द्वारा, लूका ने खुलासा किया कि यीशु दाऊद का धर्मी पुत्र था।

और अंततः, लूका ने शमूएल की पुस्तक के अंतिम विभाजन — दाऊद की स्थायी राजशाही — से भी प्रेरितों के काम 2:14-41 में निष्कर्ष निकाले। यहाँ पर उसने पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के उपदेश का अपना विवरण पेश किया। पद 30 और 31 में, पतरस ने समझाया कि क्यों परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जिलाया जब उसने यह कहा:

परमेश्वर ने [दाऊद] से शपथ खाई है कि मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा; [दाऊद] ने होने वाली बात को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की (प्रेरितों 2:30-31)।

पतरस के वचनों ने यहाँ पर 2 शमूएल 7:12-13 में दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा का उल्लेख किया जहाँ परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की:

मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूँगा ... और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूँगा (2 शमूएल 7:12-13)।

जैसा कि लूका ने संकेत दिया, स्वर्ग में अपने सिंहासन पर यीशु का बैठना इस बात का प्रमाण था कि यीशु दाऊद का धर्मी पुत्र था, जिसे परमेश्वर के राज्य को पूरे संसार भर में फैलाने के लिए नियुक्त किया गया है। अन्य नए नियम के लेखकों के समान, शमूएल की पुस्तक के लिए लूका द्वारा दिए गए हर संदर्भ ने एक विषय पर जोर दिया: यीशु दाऊद का धर्मी पुत्र है जो इस्राएल की इस आशा को पूरा करता है कि परमेश्वर का राज्य एक दिन पृथ्वी की छोर तक फैल जाएगा।

भविष्य का मसीहा दाऊद का वंशज होगा क्योंकि दाऊद यहूदा के गोत्र से था, वही गोत्र जिसका उल्लेख विशेष रूप से याकुब की आशीषों में उसके मरने से पहले किया गया, जब उसने कहा कि “न तो यहूदा से राजदण्ड” — राजाओं का चिन्ह — “छूटेगा।” और यह भविष्यवाणी पूरी होगी। यहूदा के गोत्र से, सिर्फ यीशु ही ऐसा राजा है जो स्वयं परमेश्वर के मन के अनुसार है। जब यीशु का जन्म हुआ, तो उसने प्रतिज्ञा, विश्वासयोग्यता, अनुग्रह, परमेश्वर का अनुग्रह सभी को एक साथ पूरा किया। मसीह के माध्यम से, परमेश्वर अनुग्रह के माध्यम से मानवता को बचाने की अपनी इच्छा को पूरा करता है, जिसकी प्रतिज्ञा उसने पुराने नियम में की थी, और जिसे व्यवस्था के द्वारा मानवता प्राप्त करने में असमर्थ थी।

— रेव्ह. डा. स्टीफन टॉन्ग, अनुवादित

फिर भी, जैसा हमने अन्य श्रृंखलाओं में विस्तार से देखा है, कि लूका और नए नियम के लेखकों ने यह भी स्पष्ट किया कि यीशु ने इस आशा को अचानक से या एक ही बार में पूरा नहीं किया। इसके बजाय, बार-बार, नए नियम के लेखकों ने समझाया कि यीशु तीन अवस्थाओं में परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाता है।

उसने अपने पहले आगमन में अपने राज्य के उद्घाटन के दौरान शमूएल की पुस्तक की आशाओं को पूरा करना शुरू किया। वह कलीसिया के पूरे इतिहास भर में अपने राज्य की निरंतरता के दौरान धार्मिकता के अपने शासन को फैलाना जारी रखता है। और यीशु परमेश्वर के राज्य को इसकी पूर्णता में तब लाएगा जब वह अपने राज्य की परिपूर्णता के समय महिमा में वापस आएगा। दाऊद के पुत्र के रूप में मसीह के धर्मी शासन पर यह तीहरा दृष्टिकोण मसीही विश्वास के लिए इतना महत्वपूर्ण है कि हमें हमेशा मसीह के राज्य के सभी तीन चरणों के प्रकाश में शमूएल की पुस्तक को लागू करना चाहिए।

उद्घाटन

पहले स्थान पर, मसीह के अनुयायियों के रूप में, हम मसीह के राज्य के उद्घाटन की ओर पीछे देखने के द्वारा शमूएल की पुस्तक को अपने जीवनों के लिए लागू करते हैं। पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान, यीशु ने मानवीय निष्ठा की सभी शर्तों को पूरा किया और उन सभी के लिए अंनत उद्धार कमाया जो उस पर विश्वास करते हैं। यीशु की आज्ञाकारिता के परिणामस्वरूप, परमेश्वर की आत्मा ने उसे मृतकों में से जिलाया, और स्वर्ग में वह अपने सिंहासन पर चढ़ कर बैठ गया।

राज्य के उद्घाटन में, यीशु ने शैतान की शक्ति को नष्ट करना शुरू कर दिया और संसार भर में लोगों के लिए शैतान के चुंगल से छुटने का मार्ग खोल दिया। और स्वर्ग में अपने सिंहासन से, यीशु ने आने वाले संसार की आशीषों की तत्काल अदायगी के रूप में अपनी कलीसिया पर अपनी आत्मा को उँडेला। इसलिए, जब हम परमेश्वर के राज्य के लिए अपनी आशाओं का नवीकरण करने हेतु इस्राएल के लिए शमूएल की पुस्तक के आह्वान को पढ़ते हैं, तो हमें उस बात पर अपनी आशा रखनी चाहिए जिसे मसीह ने दाऊद के महान पुत्र के रूप में अपने राज्य के उद्घाटन में पहले ही पूरा कर लिया है।

निरंतरता

दूसरे स्थान पर, हमें कलीसिया के पूरे इतिहास में मसीह के राज्य की निरंतरता के लिए शमूएल की पुस्तक को लागू करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। 2000 वर्षों से अधिक समय के लिए, यीशु ने अपने धर्मी शासन को दिन-प्रतिदिन स्वर्ग में अपने सिंहासन से फैलाया है। और हर एक क्षण में, उसने अधिक से अधिक उन आशाओं को पूरा किया है जिन्हें शमूएल के लेखक ने दाऊद के घराने के धर्मी शासन पर रखा। सुसमाचार प्रचार के माध्यम से, मसीह परमेश्वर के विरोधियों को पराजित करना जारी रखता है। उसने पूरे संसार भर में अनगिनत पुरुषों, महिलाओं एवं बच्चों को अंधकार के साम्राज्य के चुंगल से बचाया है। और हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि वह कलीसिया के पूरे इतिहास में ऐसा ही करता रहेगा।

शमूएल के लेखक ने अपने मूल श्रोताओं को दाऊद के घराने के धर्मी शासन में उस समय आशा रखने की बुलाहट दी जब उन्होंने हतोत्साहित करने वाली कठिनाइयों का सामना किया। इसी तरह, हमें उसके राज्य की निरंतरता के दौरान राजा के रूप में मसीह की सफलता की ओर अपने हृदयों को लगाना चाहिए।

परिपूर्णता

और अंत में, उसकी महिमामय वापसी पर मसीह के राज्य की परिपूर्णता की ओर हमारे हृदयों को मोड़ने के द्वारा, नया नियम हमें शमूएल की पुस्तक को लागू करना सिखाती है। हम न सिर्फ अतीत एवं वर्तमान की ओर देखते हैं, बल्कि हम मसीह के धर्मी शासन की पूर्ति के लिए भविष्य की ओर भी देखते हैं। जब मसीह महिमा में लौटता है, तो परमेश्वर के सभी शत्रु उसके अनंत अभिशापों के तहत हो जाएंगे, और उसके छुड़ाए हुए लोग नई सृष्टि में परमेश्वर की आशीषों की पूर्णता में रहेंगे।

एक या अन्य रूप में, शमूएल की पुस्तक के प्रत्येक भाग को दाऊद के घराने के धर्मी शासन के माध्यम से पृथ्वी के नवीकरण के लिए इस्राएल की आशाओं को बहाल करने हेतु उनको बुलाहट देने के लिए डिजाइन किया गया था। और इस कारण से, शमूएल की पुस्तक का प्रत्येक भाग हमें उस धर्मी शासन में अपनी आशाओं को नवीनीकृत करने के लिए बुलाता है जिसे मसीह पूरी सृष्टि भर में स्थापित करेगा जब वह महिमा में वापस लौटेगा।

उपसंहार

शमूएल की पुस्तक के लिए इस प्रस्तावना में, हमने इसकी पृष्ठभूमि को देखा और लेखनकारिता, तिथि, एवं उन परिस्थितियों के बारे में सीखा जिनमें यह लिखी गई थी। हमने यह भी ध्यान दिया कि शमूएल की पुस्तक को दाऊद के घराने के धर्मी शासन में अपनी आशाओं को नवीनीकृत करने के लिए इस्राएल के लोगों को बुलाहट देने के लिए कैसे बनाया गया था। और अंत में, हमने देखा कि दिव्य वाचाओं एवं परमेश्वर के राज्य पर हमारी पुस्तक के महत्व के मसीही अनुप्रयोग को मसीह पर नई वाचा के सिद्ध मध्यस्थ के रूप में हमारे विश्वास को मज़बूत करना चाहिए, जो परमेश्वर के राज्य को जैसा वह स्वर्ग में है पृथ्वी पर लाएगा।

परमेश्वर ने शमूएल की पुस्तक पहले अपने प्राचीन लोगों को तब दी जब इस्राएल में बहुतों ने आशा खो दी थी। हमारे जीवन की कठिनाइयों के कारण हम भी आशा खो देते हैं। लेकिन उस हर एक रुकावट को हटाने के लिए जिसने उन्हें विचलित किया और यह विश्वास दिलाने के लिए कि परमेश्वर का राज्य अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुँच जाएगा शमूएल के लेखक ने इस्राएल को प्रोत्साहित किया। जब हम सीखते हैं कि शमूएल के लेखक ने इस दिशा में इस्राएल की अगुवाई कैसे की, तो हम स्वयं अपने जीवनों से हर एक रुकावट को दूर करने के लिए कई अवसरों को पाएंगे। दाऊद का धर्मी पुत्र, यीशु आया है, और परमेश्वर ने उसे उसके सिंहासन पर बिठाया है। हर एक दिन यीशु परमेश्वर के शासन को आगे और आगे बढ़ाता है। और शमूएल, शाऊल एवं दाऊद के जीवनों में परमेश्वर ने जो किया, उससे शमूएल की पुस्तक हमें आश्वस्त करती है, कि परमेश्वर का राज्य असफल नहीं होगा। पृथ्वी की छोर तक का न्याय करने के लिए मसीह महिमा के साथ वापस लौटेगा। और वे सब जिन्होंने उस पर विश्वास किया है उसके साथ आने वाले परमेश्वर के अद्भुत राज्य में राज करेंगे।